सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 20 ● अंक 9-10 ● दिसम्बर-जनवरी 2024 ● मूल्य : 20 रु.

शुभ आशीर्वाद

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक, युग दिवाकर

खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

चेन्नई महानगर में आत्मस्पन्दन उपधान में उपधान तप के मुख्य लाभार्थी

विमलेश डागा

सपना डागा

श्रीमती किरणदेवी-प्रसन्नचंद, रविन्द्र-रेखा,
विमलेश-सपना, अश्विन-शालु,
दीपिका, साक्षी, वंश, शैली विहान, प्रियांश
डागा परिवार
चेन्नई-गुवाहाटी-नागौर

सेलम नगर की धन्यधरा पर

महोत्सव प्रारंभ
15 जनवरी 2024

प्रतिष्ठा, दीक्षा एवं बड़ी दीक्षा
21 जनवरी 2024

संघगौरव कवाड़ परिवार द्वारा स्वद्रव्य से निर्मित
श्री सीमंधर स्वामी मंदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाड़ी के

नमो सीमंधरम्

अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं आत्मसमर्पणम् बडी दीक्षा–दीक्षा महोत्सव में पधारने का हृदय से आमंत्रणम्

प्रतिष्ठाकारकम् : पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक, युग दिवाकर, खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

महोत्सव स्थल — Ratnavel Kalyana Mandapan, 5 Road, Salem

प्रतिष्ठा स्थल — Kawad niwas, 63/1 ft rood, Shankar nagar, Salem-636007

प्रतिष्ठा स्थल

संघगौरव श्री पारसचंद, पुखराज, धर्मचंद कवाड़ परिवार

फलोदी, तिरूपात्तुर, बेंगलुरू, चेन्नई, सेलम

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

अहे वयइ कोहेणं माणेणं अहमा गइ।
माया गइपडिग्घाओ लोहाओ दुहओ भयं।

क्रोध से मनुष्य अधोगति (नरकगति) में जाता है मान से अधम गति प्राप्त होती है। माया से शुभ गति का विनाश होता है। लोभ से इस लोक में और परलोक में भय होता है।

By anger one gets the lowest type of life (i.e. Narak-gati). By ego one gets the low type of life. Deceit becomes a hindrance to a better state of life. Greed endagers this as well as the next life.

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 20 अंक : 9-10 5 दिसम्बर-जनवरी 2024 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष - उत्तमचंद रांका, चैन्नई

प्रधान संपादक : श्रीमती पुष्पा ए. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653
रुपये जमा कराने के बाद पेढ़ी में सूचना देना अनिवार्य है।

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
मोबाइल : 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	धूलिया (दादावाड़ी)	05
3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	धूले गृह मंदिर	06
4. प्रिय आत्मन्	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	07
5. विहार डायरी	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
6. खरतरगच्छ विरासत	मोहनचंद ढड्ढा, चेन्नई	09
7. परम स्वर्ग की स्वर्ण सीढ़ी	उपाध्याय मनितप्रभसागरजी म.	10
8. अधूरा सपना	पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	11
9. पूज्यश्री का चेन्नई प्रवास	पदमचंद टाटिया, चेन्नई	12
10. ऐसे है हमारे आचार्यश्री !	सौ. अरुणा मुणोत, चेन्नई	13
11. समाचार दर्शन	संकलित	14
12. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	50

विशेष दिवस

- 6. जनवरी श्री पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक
- 7. जनवरी श्री पार्श्वनाथ दीक्षा कल्याणक, बिछुड़ो प्रारंभ दोपहर 4.02
- 8. जनवरी श्री चन्द्रप्रभस्वामी जन्म कल्याणक
- 9. जनवरी श्री चन्द्रप्रभस्वामी दीक्षा कल्याणक, बिछुडो समाप्त रात्रि 9.12
- 10. जनवरी पाक्षिक प्रतिक्रमण, श्री शीतलनाथ केवलज्ञान क., पू. महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म. की 207वीं पुण्यतिथि
- 13. जनवरी पंचक प्रारंभ रात्रि 11.36
- 14. जनवरी धनार्क मलमास समाप्त रात्रि 2.44
- 16. जनवरी श्री विमलनाथ केवलज्ञान कल्याणक
- 18. जनवरी पंचक समाप्त प्रातः 3.34
- 19. जनवरी श्री शान्तिनाथ केवलज्ञान कल्याणक
- 20. जनवरी आ. श्री जिनआनंदसागरसूरि म. 63वीं पुण्यतिथि, पालीताना
- 21. जनवरी श्री अजितनाथ केवलज्ञान कल्याणक, रोहिणी
- 24. जनवरी पाक्षिक प्रतिक्रमण, श्री अभिनन्दन स्वामी केवलज्ञान कल्याणक
- 25. जनवरी श्री धर्मनाथ केवलज्ञान कल्याणक, पुष्य नक्षत्र प्रारंभ प्रातः 8.17
- 26. जनवरी जन.पुष्य नक्षत्र समाप्त प्रातः 10.29
- 29. जनवरी पू. गणनायक सुखसागर जी 138वीं पुण्यतिथि, फलोदी
- 1. फरवरी - श्री पद्मप्रभस्वामी च्यवन कल्याणक
- 3. फरवरी बिछुड़ो प्रारंभ रात्रि 1.04
- 6. फरवरी बिछुड़ो समाप्त प्रातः 7.36
- 7. फरवरी श्री शीतलनाथ जन्म एवं दीक्षा कल्याणक
- 8. फरवरी मेरू तेरस, श्री आदिनाथ मोक्ष कल्याणक
- 9. फरवरी पाक्षिक प्रतिक्रमण, श्री श्रेयांसनाथ केवलज्ञान कल्याणक
- 10. फरवरी आ. श्रीजिनरत्नसूरिजी म.सा. पुण्यतिथि, माण्डवी (कच्छ), पंचक प्रा. प्रातः 10.03
- 11. फरवरी श्री अभिनन्दनस्वामी जन्म क., श्रीवासुपूज्यस्वामी केवलज्ञान कल्याणक
- 12. फरवरी श्री विमलनाथ जन्मोत्सव, कंपिल तीर्थ वर्षतोत्सव, कुशल वाटिका-बाड़मेर वर्षगांठ, श्री विमलनाथ जन्म कल्याणक, श्री धर्मनाथ जन्म कल्याणक
- 13. फरवरी श्री विमलनाथ दीक्षा कल्याणक
- 14. फरवरी पंचक समाप्त प्रातः 10.44

विज्ञापन हेतु ट्रस्टी श्री गौतम बी. संकलेचा चेन्नई से संपर्क करावे मोबाइल नंबर 94440 45407

नवप्रभात

जीवन की राहें सीधी नहीं है। कभी बांयें घूमना पडता है, कभी दांये! कभी ऊपर चढना होता है, कभी नीचे उतरना पडता है। कभी कदम सही राह पर आगे बढते हैं, कभी गलत रास्ते पर कदम चल पडते हैं।

कभी सही रास्ते को गलत मानकर छोड देते हैं, कभी गलत रास्ते को सही समझ कर उस पर आगे बढ जाते हैं।

बहुत घूमने के बाद लगता है- घूमना व्यर्थ था। क्योंकि वापस व्यक्ति अपने आपको उसी जगह पाता है, जहाँ से उसने अपनी यात्रा प्रारंभ की थी।

घूमा बहुत, मिला कुछ नहीं... चला बहुत, पहुँचा कहीं नहीं.... थका बहुत, विश्राम कहीं नहीं...।

किया बहुत, परिणाम कुछ नहीं।

होड की दौड में दौडते जाते हैं, जीवन पूरा हो जाता है, पर प्राप्ति के नाम पर शून्य ही हमारे हाथ लगता है।

कभी कारण की खोज नहीं की। कभी भविष्य की ओर आंखें नहीं उठाई। कभी अतीत में छलांग लगाकर गहराई से चिंतन नहीं किया।

यदि हृदय के धरातल पर प्रश्न चिन्ह उपस्थित हो गया होता, तो जीवन की धारा को अमृत-कोष की ओर मोड दिया होता।

क्या कारण है कि मैं आज तक भटक रहा हूँ!

क्या कारण है कि मैं जीवन को सार्थक नहीं कर पाया हूँ!

यह प्रश्न हमें सम्यक् पथ से साक्षात् कराता है। जब गहराई से यह प्रश्न उठता है तो समाधान मिलता है- मैंने अपने आपको नहीं जाना, इसीलिये भटकाव है।

बस! इस समाधान को पाते ही दिशा बदल जाती है... दृष्टि बदल जाती है. .. पुरुषार्थ बदल जाता है... और फिर मिलता है सम्यक् परिणाम!

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 63

धूलिया (दादावाड़ी)

-उपाध्याय मनितप्रभसागरजी म.सा.
- साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

लगभग तीन लाख की आबादी वाले धूलिया नगर से 4 कि.मी. की दूरी पर स्थित दादावाड़ी की शान निराली है। प्राचीन नहीं होने पर भी भव्य स्वरूप होने से श्रद्धालुओं का आना-जाना बना रहता है।

चालीस गाँव हाइवे मार्ग पर महानगरी की भांति मल्टीपरपज शैली में आर.सी.सी. के स्तम्भों पर निर्मित तीन मंज़िला भवन दूर से ही आकृष्ट कर लेता है।

इस संपूर्ण परिसर के भूमिदाता धूलिया निवासी श्री जुगराजजी मदनलालजी मुथा है।

नीचे के तल पर प्रवचन हॉल है, उसके ऊपर दादावाड़ी निर्मित है। दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वर जी म.सा. की कमल पर खड़ी प्रतिमा अलौकिक आनंद का वर्षण करती प्रतीत होती है, जिसमें आभामण्डल और ज़्यादा खूबसूरती भर देता है। कुर्सी एवं आभामण्डल सहित 71।। दादा गुरुदेव की प्रतिमा प्रथम दृष्टि में ही मन को मोह लेती है।

गुरुदेव के दाहिनी तरफ प्रथम गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि जी एवं बायीं तरफ द्वितीय गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि जी के श्वेत मार्बल से निर्मित चरणों की शोभा ही कुछ निराली है।

कुशल गुरुदेव के गंभारे के बाहर दो छोटी थामलियों में गोखले में बने हुए हैं, जिसमें गौरा भैरू एवं काला भैरू प्रतिष्ठित हैं।

यह हॉल आगे से लगभग 25 फीट चौड़ा और पीछे 40 फीट चौड़ा है। 50 फीट लम्बे हॉल में गुरुदेव के समानान्तर दाहिनी तरफ की छतरी में नाकोड़ा भैरव एवं बायीं तरफ की छतरी में घंटाकर्ण महावीर की मुखमुद्रा मन को प्रमुदित कर देती है। इन्हें भी आगे द्वार बनाकर अलग से गंभारे का रूप देने का प्रयास किया गया है। दादा गुरुदेव, नाकोड़ा भैरव एवं घंटाकर्ण महावीर की अलग-अलग प्रदक्षिणा दी जा सकती है।

दादावाड़ी में प्रवेश करते ही दोनों तरफ से सीढ़ियाँ चढ़कर मंदिर में जाने का रास्ता है। मूलनायक के रूप में अमीझरा शीतलनाथ की कृष्ण पाषाण में निर्मित प्रतिमा एवं परिकर अत्यंत सुहावने प्रतीत होते हैं। मूलनायक परमात्मा की प्रतिमा अत्यन्त प्राचीन है। यह प्रतिमा शहादा-खेतिया मार्ग पर बसे अति प्राचीन सुलतानपुर नगर की खुदाई में प्राप्त हुई है। इस क्षेत्र में जिन प्रतिमाऐं यत्र तत्र उपलब्ध होती है। इससे यह सिद्ध होता है कि एक समय में यह जैन नगर रहा होगा। मूलनायक के एक ओर आदिनाथ एवं दूसरी ओर महावीर स्वामी विराजमान हैं। दादावाड़ी की भांति मूल गंभारे के बाहर दायीं तरफ पुण्डरीक स्वामी एवं बायीं तरफ गौतम स्वामी विराजमान हैं।

इस मंदिर-दादावाड़ी का निर्माण विदुषी साध्वी श्री मणिप्रभा श्री जी म. के सदुपदेश से हुआ है और उन्हीं की पावन निश्रा में प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ।

यहाँ भोजनशाला नियमित रूप से चलती है। साधु-साध्वी जी के प्रवासार्थ उपाश्रय भी स्थित है। धर्मशाला भी बनी हुई है। बलसाणा तीर्थ यहाँ से मात्र 80

कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

श्री अमीझरा शीतलनाथ श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट उक्त दादावाड़ी की व्यवस्था कर रहा है।

पता : श्री अमीझरा शीतलनाथ जिनालय एवं जिनकुशलसूरि दादावाड़ी

शीतलनाथ नगर, गेट नं. 116, मोहाडी, हाइवे नं. 211, चालीस गाँव रोड़, धूलिया - 424 311

(दूरभाष : 02562-231280)

धूले गृह मंदिर - 64

धुले महाराष्ट्र का सुप्रसिद्ध नगर हैं। जहाँ विशाल दादावाडी का निर्माण स्वतंत्र रूप से हुआ है। यहाँ दादा गुरुदेव के भक्त अनुयायी बडी संख्या में निवास करते हैं। हालाकि साधु संतों के विचरण के अभाव में परिवर्तन भी हुआ है।

मूल तिवरी निवासी श्री बालुभाई, सुरेन्द्रकुमारजी, जितेन्द्रकुमारजी टाटिया परिवार वर्षों से यहाँ निवास करता है। यह परिवार परमात्मा एवं दादा गुरुदेव का परम भक्त है। अपनी श्रद्धा को प्रकट करने के लिये उन्होंने अपने घर में गृह मंदिर बनवाया जिसमें अंजनशलाका करवाकर विमलनाथ परमात्मा की श्यामवर्णी पाषाण प्रतिमा सपरिकर बिराजमान की। इस गृह मंदिर का निर्माण उन्होंने अपने दादाजी स्व. श्री हनुतमलजी तथा पिताजी श्री मांगीलालजी व माताजी श्रीमती बदामीदेवी की पावन प्रेरणा से करवाया।

गृह मंदिर में बिराजमान विमलनाथ परमात्मा की चमत्कारी प्रतिमा की सेवा पूजा टाटिया परिवार तो नित्य प्रति करता ही है। दर्शन पूजन करने के लिये आजु बाजु के श्रावक श्राविका भी बड़ी संख्या में आते हैं।

इस गृह मंदिर में एक तरफ गौतमस्वामी की प्रतिमा बिराजमान की गई है। धूले में चातुर्मासार्थ बिराजमान साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा प्राप्त कर उनके हृदय में दादा गुरुदेव की प्रतिमा बिराजमान करने का भाव प्रकट हुआ। उनकी शिष्या साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. के प्रभावशाली प्रवचनों से उनकी भावना दृढ़ बनी।

उन्होंने इस विषय में मुंबई में चातुर्मासार्थ बिराजमान पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. का मार्गदर्शन प्राप्त करने का आदेश दिया। उनकी भावनानुसार मणिधारी दादा गुरुदेवश्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की 9 इंची आकर्षक नयनाभिराम प्रतिमा तैयार करवाई गई। प्रतिमाजी का अंजनशलाका विधान पूज्य गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. द्वारा करवाया गया।

वि. 2069 मिगसर वदि 2 ता. 30.11.2012 को महोत्सव के साथ साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में गुरुदेव की प्रतिष्ठा करवाई गई। गृह मंदिर में बिराजमान मणिधारी दादा गुरुदेव की प्रतिमा के दर्शन कर लोग धन्यता का अनुभव करते हैं।

पता : श्री सुरेन्द्रकुमार मांगीलाल टाटिया

19 बी, विमल विद्या, नित्यानंद नगर सोसायटी, नटराज सिनेमा के पीछे, 80 फीट रोड़, पो. धूलिया - 424 001 (महाराष्ट्र),

दूरभाष : 02562-238915/237915, मो. 98230 45815

पत्र में लेख

प्रिय आत्मन्

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

चातुर्मास पूर्ण हुआ है। साधु साध्वियों के विहार प्रारंभ हुए हैं।

तुम्हें अपने आप से प्रश्न करना है। मैंने इस चातुर्मास में क्या पाया?

एक किसान के लिये जितना मूल्य चातुर्मास के कालखण्ड का होता है, उससे भी ज्यादा मूल्यवान् चातुर्मास धर्म से जुडे व्यक्ति के लिये होता है।

जिस प्रकार किसान चातुर्मास की प्रतीक्षा करता है। वैसे ही धर्म से जुडा व्यक्ति चातुर्मास का इंतजार करता है। किसान सोचता है- चौमासा आयेगा... बरसात होगी... मैं बीज बोऊँगा... खेत खलिहान साफ करूँगा... थोडी धूप होगी... फिर फसल आयेगी... अनाज मिलेगा...!

ऐसे ही सपने धर्म से जुडा व्यक्ति देखता है- चौमासा आयेगा... गुरु महाराज आयेंगे... प्रवचन होंगे... जिनवाणी बरसेगी... धर्म समझूंगा... त्याग होगा... तपस्या करूँगा.... आराधना करूँगा... !

प्रश्न है- इस चातुर्मास की मेरे जीवन के लिये फलश्रुति क्या? मैंने परिणाम की फसल पाई या नहीं! या मैं वैसा ही रहा!

मेरे अन्तर से दुर्गुणों की समाप्ति हुई या नहीं!

मेरे कषाय कम हुए या नहीं!

मेरे अन्तर में आत्मरुचि जगी या नहीं!

यह चातुर्मास मेरे लिये हितकारी बन सकता था... यदि मैंने अपने हृदय के द्वार खोल दिये होते!

यह चातुर्मास मेरे लिये परम उपकारी बन सकता था... यदि मैंने अपने अन्तर में जिज्ञासा को उपस्थित किया होता!

यह चातुर्मास मेरे लिये कल्याणकारी बन सकता था... यदि मैंने पाने का दृढ़ संकल्प कर लिया होता!

उसके अभाव में एक नहीं.. न मालूम कितने चातुर्मास मैंने गंवा दिये हैं।

मैं बदला नहीं। वैसा का वैसा रहा।

एक शिष्य गुरु के चरणों की उपासना कर रहा था। वह उनके चरणों में 12 वर्षों से साधना कर रहा था। एक दिन उसने अपने गुरु से कहा- भगवन्! आपने मुझसे कहा था- तूं मेरे चरणों में रह कर साधना करेगा तो मैं तुम्हें परमात्मा की दिव्य ज्योति का साक्षात्कार कराऊँगा, लेकिन ज्योति तो दूर, उसका तनिक आभास भी नहीं हो सका। मुझे परमात्मा के दर्शन कब करायेंगे?

शिष्य की प्रार्थना सुन कर संत मुस्कुराये और फिर बोले- वास्तव में काफी देर हुई है। चलो! मैं तुम्हें आज परमात्मा का साक्षात्कार कराता हूँ।

एक काम करो। सांझ ढलने को है। अंधेरा होने को है। कमरे के एक गोखले में दीपक रखा है, उसे जला लो। उसके उजाले में फिर चर्चा करेंगे... बातें करेंगे...!

शिष्य प्रसन्न होता हुआ... दौडता हुआ गया। और दीपक जलाने लगा। उसने दियासलाई ली और दीपक की बत्ती जलाने लगा।

किन्तु आश्चर्य! एक एक करके दियासलाई की पूरी पेटी खाली हो गई... पर दीपक नहीं जला।

वह गुरु के पास गया और बोला- भगवन्! दीपक जल नहीं रहा है।

गुरु ने कहा- जरा ध्यान से देखो! दीपक क्यों नहीं जल रहा है!

शिष्य ने ध्यान से दीपक को देखा तो पाया कि दीपक में घी या तेल की जगह पानी भरा है। बत्ती पानी में डूबी है।

वह समझ गया कि दीपक क्यों नहीं जल पा रहा है।

वह बोला- भगवन्! दीपक में तो पानी भरा है। दियासलाई की एक क्या दस पेटियाँ खाली कर देंगे, तब भी दीपक नहीं जलने वाला!

गुरु ने कहा- यही बात तुम पर लागू होती है वत्स! मैं भी तेरा दीया जलाने का बारह वर्षों से प्रयत्न कर रहा हूँ। पर तूंने अपने हृदय के पात्र को समर्पण, संकल्प, सरलता, सहजता के घी तेल से भरने के बजाय क्रोध, घृणा, उपेक्षा, कषाय और वासना के गन्दे जल से भर रखा है। दीया कैसे

(शेष पृष्ठ 49 पर)

140

विहार डायरी

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

सेलम से हमने ईरोड की ओर विहार किया। इस डायरी का लेखन करते समय मेरी दैनिक डायरी मेरे हाथों में है। ईरोड हम 7 अप्रेल का पहुँचे थे। कुल मिलाकर चार दिनों का प्रवास ईरोड में रहा। ता. 11 को छह री पालित संघ के साथ अवलपुन्दराई तीर्थ पहुँचे।

यहाँ छोटा-सा मंदिर है। अति प्राचीन प्रतिमा है। तमिलनाडु एक समय में जैन धर्म का बहुत विशाल केन्द्र था। हजारों की संख्या में मंदिर थे। बीच के काल में जब धर्मपरिवर्तन का वातावरण बना तो उसमें जैन समाज नामशेष हो गया। जिन मंदिर अन्य मंदिरों का नाम धारण कर पूजे जाने लगे। आज भी तमिलनाडु में सैंकडों की संख्या में ऐसे मंदिर है, जहाँ स्पष्टत: जिन प्रतिमाऐं बिराजित है, पर वे अन्य देवों अथवा देवियों के रूप में पूजी जा रही है।

अवल पुन्दराई गांव में प्राचीन प्रतिमा का जब पता चला तो ईरोड संघ ने वार्तालाप आदि द्वारा यह मंदिर अपने हाथ में ले लिया। आज तो इस तीर्थ का जीर्णोद्धार हो चुका है। विशाल मंदिर बन चुका है। अन्य सारी आवश्यक व्यवस्थाऐं उपलब्ध है। पर हम जब 11 अप्रेल 2005 को वहाँ पहुँचे थे, तब एक छोटे से कक्ष नुमा मंदिर में परमात्मा पार्श्वनाथ की प्रतिमा बिराजित थी। श्याम वर्ण की प्रतिमा का पाषाण थोडा खुरदरा लग रहा था। पांच फणों वाली यह प्रतिमा परिकर में सुशोभित हो रही थी। दोनों ओर दो चामरधारी थे। परमात्मा के शासन रक्षक के रूप में धरणेन्द्र देव का फण पीछे से ऊपर मस्तक की ओर आता हुआ दिखाई दे रहा था।

प्रभु की प्रतिमा की बनावट में दोनों कंधों में थोडा फर्क दिख रहा था। दांयें कंधे की अपेक्षा बांयां कंधा थोडा बडा था। अर्ध पद्मासन वाली यह प्रतिमा दिगम्बर गुणों से युक्त लग रही थी।

जिन मंदिर में पद्मावती देवी की प्रतिमा भी थी। नग्नत्व लिये यह प्रतिमा चेहरे से अतीव सुन्दर व सौम्य भासित हो रही थी। चार हाथ वाली इस प्रतिमा के नीचे सिंह का वाहन था। एक चामरधारी भी था।

अन्दर शिवलिंग व गणेशजी भी किसी ने बिराजमान कर दिये थे। मंदिर के बाहर नंदी का रूप देने के लिये दो पाषाण खण्डों को रख दिया गया था।

परमात्मा पार्श्वनाथ की प्रतिमा अतीव आकर्षक थी। दर्शन कर परम धन्यता का अनुभव किया। आज तो वह तीर्थ विकसित हो चुका है। जहाँ हजारों हजारों लोग आकर दर्शन कर अपने मानस में धन्यता का अनुभव करते हैं। हमने इस तीर्थ के विकास के लिये योग्य मार्गदर्शन दिया था।

वहाँ से विहार कर हम ता. 14 अप्रेल को तिरपुर पहुँचे। बहिन म. आदि साध्वी मंडल वहीं था। वे एक दिन पूर्व विहार करने वाले थे। हमारे आगमन के संवाद से एक दिन रूक कर फिर उनका विहार कुनूर की ओर हुआ। ओलीजी की आराधना वहीं करवाई।

हमारा तिरपुर में त्रिदिवसीय प्रवास के पश्चात् कोयम्बतूर की ओर विहार हुआ। नवपद ओली पर्व के दिन थे।

वहाँ श्री संघ में पंन्यास प्रवर श्री चंद्रजीतविजयजी म. बिराजमान थे। साथ ही प्रवचन हुए। कोयम्बतूर में खरतरगच्छ संघ के अनुयायी बडी संख्या में रहते हैं। पर संगठन के अभाव में धीरे धीरे अपनी समाचारी को वे भूलंते जा रहे हैं। यहाँ सिवांची मालाणी के काफी श्रावक रहते हैं। कानाना, बाडमेर, मोकलसर, सादडी, जैसलमेर, जसोल आदि क्षेत्रों के लोगों में बहुत उत्साह था। आहोर का बंदा मुथा परिवार हमारा

परिचित था। आहोर नगर में श्री विमलनाथ परमात्मा के मंदिर के पास दादावाडी का निर्माण हुआ था। उसकी प्रतिष्ठा वि. 2035 वैशाख सुदि में पूज्य गुरुदेवश्री के करकमलों से संपन्न हुई थी। उस प्रतिष्ठा का वातावरण मुझे आज भी याद है।

आहोर नगर में वर्तमान में खरतरगच्छ की समाचारी पालन करने वाला एक भी परिवार प्राय: नहीं है। फिर भी वहाँ तीन दादावाडियाँ है। दादा गुरुदेव के प्रति आहोर वासी श्रावकों के हृदय में अपार श्रद्धा है। उसके पीछे बाडमेर के यतिवर्य श्री नेमीचंदजी की मेहनत रही है। श्री विमलनाथ परमात्मा के मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा जयपुर गद्दी के श्रीपूज्य श्री जिनधरणेन्द्रसूरि के करकमलों से वि. 1995 में हुई थी। जहाज मंदिर की दादावाडी के मूलनायक गुरुदेव की प्रतिमा भराने का लाभ आहोर संघ ने ही लिया था।

कोयम्बतूर में 19 अप्रेल को प्रवेश हुआ था। 22 अप्रेल को परमात्मा महावीर प्रभु का जन्म कल्याणक था। उसके बाद विहार करते हुए कोयम्बतूर शहर से बाहर गुरु कृपा दादावाडी पहुँचे थे। इस दादावाडी का निर्माण श्री विजयचंदजी झाबक ने कराया है। यहाँ वृद्धाश्रम व अस्पताल भी चलता है। सारी व्यवस्था व अर्थ-व्यय श्री विजयचंदजी झाबक करते हैं। उनकी सेवा भावना का वातावरण देख कर मन अत्यन्त प्रमुदित हो गया।

यहाँ चल रहा वृद्धाश्रम किसी जाति या धर्म से बंधा हुआ नहीं है। हर जाति व धर्म सम्प्रदाय के लोग वहाँ रहते हैं। दादा गुरुदेव के पाठ व भक्ति से दिनचर्या का प्रारंभ होता है। व गुरुदेव का नाम लेते लेते ही सोना होता है।

क्रमश:

खरतरगच्छ विरासत

अणहिलपुर पट्टनपुर देखो गुर्जर देश महान् है।
सुविहित विधि युत विचरण करते सूरि जिनेश्वर शान है।।

पुर में चैत्यवासी यतियों का प्रबल चला बोलंबाला।
राजा दुर्लभ ने अपने शासन को नीति गुण ढाला।।

पंचासरा प्रभु पार्श्व द्वार पर हुआ तभी शास्त्रार्थ बडा।
सूरि जिनेश्वर सूराचार्य में जन समूह भारी उमडा।।

संवत् सहस पचत्तर में जब जीत गये वर जिनेश्वरा।
प्रमुदित होकर नृप दुर्लभ ने दिया खिताब खरतरा।।

तब से जिनशासन नभ में खरतरगच्छ नाम प्रसिद्ध भया।
काती अम्मावस को मोहन ढड्ढा ने गुणगान किया।।

– मोहनचंद ढड्ढा, चेन्नई

रात्री भोजन त्याग

परम स्वर्ग की स्वर्ण सीढ़ी

– उपाध्याय मनितप्रभसागरजी म.

आहार जीवन संचालन की महत्त्वपूर्ण अनिवार्यता है। आहार की प्रवृत्ति चारों गति के जीवों में समान रूप से दिखाई देती है परन्तु आहार 'कब करना' इस संदर्भ में बुद्धिमान जीव ही विचार कर सकते हैं।

रत्नसंचय में रात्रि भोजन के दोषों के बारे में कहा गया कि '**बहुदोस आउ थोवं**' रात्रि भोजन में इतने अधिक दोष हैं कि उन दोषों को बताने के लिए उम्र भी कम पडती है।

योगशास्त्र के तीसरे अध्याय में श्री हेमचन्द्राचार्य भगवंत एक घटना का उल्लेख करते हैं–

श्रूयते ह्यन्यशपथान्नादृत्यैव लक्ष्मणः।
निशाभोजनशपथं, कारितो वनमालया।।

रामायण काल की एक घटना सुनते हैं कि वनवास काल में गाँव–गाँव, नगर–नगर परिभ्रमण करते हुए राम, लक्ष्मण और सीता कुबेर नगर में पहुंचे। वहाँ के राजा महीधर की पुत्री वनमाला ने लक्ष्मण के कण्ठ में वरमाला का आरोपण किया।

जब लक्ष्मण उसे छोडकर श्रीराम के साथ आगे बढने लगे, तब वनमाला को अपने पिता के घर पर ही रहना पड़ा।

उस समय उसने लक्ष्मण से वापस लौटने की कसम खाने का आग्रह किया। लक्ष्मण ने कहा– भैया श्री रामचन्द्रजी को उनके अभीष्ट स्थल पर छोडकर अगर मैं वापस न आऊँ तो मुझे हिंसा, झूठ, चोरी, अब्रह्मचर्य और परिग्रह का पाप लगे। इनका सेवन करने वाले की जो गति होती है, वह गति मेरी हो। पर वनमाला को इस कसम से संतोष न हुआ।

उसने कहा कि रात्रि भोजन करने वाले पापी की जो गति होती है, वह मेरी (लक्ष्मण की)गति हो, यह कसम लो तो ही मैं तुम्हें वन–विहार की आज्ञा दे सकती हूँ।

कहा जाता है कि वासुदेव लक्ष्मण ने वनमाला के कथन को स्वीकार किया, तब उसने लक्ष्मण को वन–गमन की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की।

प्रश्न होता है कि क्या हिंसा आदि पाँच पापों से भी ज्यादा पाप रात्रि भोजन में है? तो इसका उत्तर सकारात्मक तौर पर प्राप्त होगा। आप तर्क करेंगे कि ऐसे कैसे? तो प्रत्युत्तर में कहना पडेगा–

❁ रात्रि काल में त्रस–स्थावर, सूक्ष्म–बादर, छोटे–बडे असंख्य–अनन्त जीवों की उत्पत्ति होती है, अतः हिंसा का दोष लगता है।

❁ रात्रि भोजन में सुख नहीं होने पर भी सुख का भ्रम पालने से अपने साथ झूठ बोलने का एवं प्रवंचना का दोष लगता है।

❁ वीतरागी ज्ञानी महर्षियों के द्वारा प्रदत्त रात्रि भोजन त्याग नामक आज्ञा की चोरी का दोष लगता है।

❁ अपनी आत्मा (ब्रह्म) में विचरण करने के भाव का अभाव होने से अब्रह्मचर्य का दोष लगता है। रात्रि भोजी को विकार का विशेष उन्माद होने से भी मैथुन का दोष लगता है।

❁ रात्रि भोजन से पाप कार्य का विस्तार, वस्तुओं का परिग्रह, चर्बी में वृद्धि आदि से परिग्रह का दोष लगता है।

योगशास्त्र में कहा गया है–

रजनी भोजनत्यागे, ये गुणाः परितोऽपि तान्।
न सर्वज्ञादृते कश्चिद्, अपरो वक्तुमीश्वरः।।70।।

रात्रिभोजन के त्याग में जो गुण विद्यमान हैं, उन्हें कहने में सर्वज्ञ परमात्मा के सिवाय कोई भी समर्थ नहीं हैं।

जैनेतर ग्रन्थों में कहा गया कि '**रात्रि भोजनं ..... वर्जनात् स्वर्गमाप्नुयात्**' रात्रि भोजन के त्याग से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। अनन्तर–पश्चात्वर्ती भवों में जीवात्मा परम मुक्ति को प्राप्त करता है।

धारावाहिक कथा 23

अधूरा सपना

पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

(गतांक से आगे)

सागर! क्या समाचार है? सरदार! मैंने कार्य की सारी जानकारी प्राप्त कर ली है।

सरदार! मैंने आपकी आज्ञानुसार अपने दो गुप्तचर शंभु और किरात को करमपुर भेजा था। उन्होंने वहां मजूदर के वेश में चार दिन रुककर सम्पूर्ण विगत समझ ली है। करमपुर गांव वैसे छोटा ही है। परन्तु समृद्धि की अपेक्षा अतिसंपन्न है। वहां कर राजा प्रजापाल अत्यन्त दयालु एवं प्रजा प्रिय है।

राजा ने आम जनता के हित में अपने महामंत्री को आदेश दिया कि अपने राज्य के हर गांव में तालाब बनवाओ।

राजा के आदेश से प्रत्येक ांव में अलग-अलग व्यक्तियों को सरोवर की खुदाई हेतु आदेश दिया गया। वीरमपुर की खुदाई का काम ठेकेदार हाथीसिंह को दिया गया। हाथीसिंह अपने मजदूरों से खुदाई करा रहा था। संयोग की बात है कि एक दिन हाथीसिंह काम की प्रगति देखने गया था। मजदूर खुदाई कर रहे और अचानक खुदाई में कुछ टकराने की आवाज हुई। मजदूर दो तीन थे। हाथीसिंह ने कहा-डरो मत। खुदाई चालु रखो। ज्योहिं कुल्हाड़ी चलायी कि अंदर से दो कलश दिखाई दिये। हाथीसिंह ने तुरंत कलश अपने कब्जे में ले लिये और उन मजदूरों से कहा-तुम किसी से कहना मत। मैं जो भी इसमें सामान निकलेगा तुम्हें दूंगा।

सेठ कलश लेकर अपने घर आ गया। सेठ का मन कलश में भरे सामान को देखने के लिये उतावला हो रहा था। उसने मजदूरों को कहा-तुम काम करो, मैं अभी कुछ ही देर में आ रहा हूं।

मजदूर पढ़े-लिखे नहीं थे। पर मूर्ख भी तो नहीं थे। वे समझ गये-सेठजी को जल्दी क्यों है? उन्होंने कहा-हमसे छिपाने की कोशिशर मत करना अन्यथा हम सारी बात राजा तक पहुंचा देंगे। यह मत समझना कि हमको कुछ समझ नहीं है। यह तो मूर्ख भी समझता है कि धारत में गड़े कलश से क्या निकल सकता है।

सेठ ने जरा गुस्से से कहा-हां...हां! ठीक है। इसमें जो भी निकलेगा उन्हें भी उसका हिस्सा अवश्य प्राप्त होगा।

सेठ को अनिच्छा पूर्वक भी प्राप्त सोने का चौथा भाग मजदूरों को देना पड़ा और कहा कि मैंने पचास प्रतिशत तुमको दिया और उतना ही मैंने रखा है।

मजदूरों ने सोचा-जो मिला उसमें संतोष करना ही उचित है। अगर राजा को समाचार दिये भी तो हमको तो कुछ मिलना नहीं है। कम से कम इतना मिला ही है। जेब से तो कुछ गया नहीं है।

सेठ ने इस प्रकार तीन भाग सोना बचा लिया। अब उसे चिंता थी कि वह इतना सारा खजाना लेकर सुरक्षित किस रास्ते से निकल सकता है।

आखिर उसने मुख्य रास्ता छोड़कर इस ओर खतरनाक अटवी से निकलना तय किया।

साबर ने वंकचूल को सार्थ के समाचार देते हुए आगे कहा-वह सार्थ तीन दिन बाद इधर से गुजरेगा। वह जिस स्थान से निकलेगा वह यहां से लगभग पचास कोस दूर है। उसने इसीलिये इस रास्ते का चुनाव किया है ताकि वह सुरक्षित अपना माल लेकर आगे बढ़ सकेए पर उसे पता नहीं कि इधर खतरा है। वह बिचार क्या जाने कि वह जिसे सुरक्षित समझ रहा है वह तो पूर्णत: असुरक्षित है।

वंकचूल ने कुछ पल चिंतन कर हिसाब लगाया कि 50 कोस जाने में कितने दिन लग सकते हैं। उसने अपने विश्वस्त साथियों से कहा-आज शुक्रवार है रविवार को वह इधर से गुजरेगा। यहां से उस स्थान पर जाने में हमें भी दो दिन समय लगेगा। उचित यहीं है कि हम आज शाम यहां से प्रस्थान करके वहां सारी अनुकूलता कर ले।

साथियों ने कहा-सरदार! हम चार व्यक्ति अभी प्रस्थान करके वहां पहुंच जाते हैं। आप सुबह प्रस्थान करना। मैंने दो सैनिक भेजे हैं। वे सार्थ की सुरक्षा में कितने सैनिक है सारी जानकारी प्राप्त करके आते ही होंगे। हमें वहां की संख्या के अनुसार ही यहां से अपनी तैयारी करली है।

(शेष पृष्ठ 49 पर)

विदाई समारोह

पूज्यश्री का चेन्नई प्रवास!

– पदमचंद टाटिया, चेन्नई

पूज्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता, आभार प्रकट करने की कोशिष कर रहा हूँ! कृतज्ञता ऐसे गुरुदेव के प्रति जो एक बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी हैं। आप आगमज्ञाता, जिनालय, निर्माता, प्रणेता तो हैं ही, लेकिन आपकी मधुर वाणी, सरलता और सहजता के कोई समानान्तर नहीं है।

30 नवम्बर को आपश्री ने वडपलनी में ध्वजा समारोह में निश्रा प्रदान की। 1 दिसम्बर को प्रातः विहार कर अनेक भक्तों के घर पर्दापण करते हुए T.Nagar में प्रवचन देकर 11 बजे Apolo Hospital में Normal Check up के लिये पहुंचे। हॉस्पीटल में डॉक्टर्स ने आपस में चर्चा करने के पश्चात् Angio करने की सलाह दी। उसी शाम 6 बजे Angiogram होता है और 1 स्टेण्ड बिठा दिया जाता है। अगले ही दिन Discharge होकर 2 दिसम्बर को आप आयनावरम दादाबाड़ी पहुंच जाते हैं और 3 दिसम्बर को प्रातः से प्रतिष्ठा के सभी कार्यक्रम में निश्रा प्रदान करते हैं। सभी विधी विधान स्वयं करवाते हैं। चाहे मंत्रोच्चारण हो, प्रवचन हो, या वरघोड़े में साथ चलना हो। इतना ही नहीं 28/29 नवंबर को आप भक्तों के घर पदार्पण हेतु 12th Floor तक चढकर पधारें।

यह आपकी निर्भयता, सरलता और जिनशासन के कार्यों के प्रति समर्पण एवं प्रतिबद्धता का जीवंत उदाहरण है।

आपके सद्गुणों की व्याख्या के लिये मेरे पास पर्याप्त शब्द नहीं है। ज्ञान के साथ सरलता का संयोग अति दुर्लभ है। लेकिन हमारे गुरुदेव में यह संयोग प्राप्त है। इसीलिये आपकी लोकप्रियता समाज के सभी समुदायों में व सभी वर्गों में फैली हुई है।

गुरुदेव के चैन्नई चातुर्मास और हमारे ट्रस्ट द्वारा नूतन जिनालय सह दादाबाड़ी के निर्माण की कहानी करीब 1 वर्ष पहले प्रारंभ हुई थी। एक तरफ गच्छाधिपति भगवंत का चातुर्मास चैन्नई में कराने की हार्दिक इच्छा और साथ ही साथ चैन्नई में जिनालय सह दादाबाड़ी की आवश्यकता।

गुरुदेव का दक्षिण की तरफ विहार Corona के कारण स्थगित हो गया था और आखिर जब दक्षिण की तरफ विहार हुआ, तो संकेत मिले कि दक्षिण में प्रवास कम समय के लिये ही होगा।

गुरुदेव ने हमारी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देते हुए अन्य संघों की विनंतियों के उपरान्त भी हमारी विनंती को स्वीकार कर हमारे ट्रस्ट को चातुर्मास प्रदान किया। आप 2500-3000 किलोमीटर विहार कर चैन्नई पधारे।

हमारे ट्रस्ट को भी गुरुदेव के कर कमलों से ही प्रतिष्ठ करवानी थी अतः केवल 1 वर्ष में ट्रस्ट का पंजीकरण, भूमि का क्रय, दो मंजिला सुन्दर मंदिर व दादावाड़ी का निर्माण, शासनोत्कर्ष वर्षावास, आत्मस्पंदन उपधान तप एवं अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव इत्यादि सफल आयोजन आपने मार्गदर्शन व निश्रा में सम्पन्न हुए।

भीषण गर्मी हो चाहे अति वर्षा हो लेकिन सभी कार्य योजना अनुसार समय पर अत्यन्त हर्षोल्लास से सम्पन्न हुए। यह आपश्री के पुण्योदय एवं दिव्य शक्ति से ही सम्भव हो सका है।

विदाई समारोह के साथ यह कहानी यहां समाप्त नहीं होगी। कहानी के दूसरे भाग को प्रारम्भ करना है। हमें उपाश्रय भवन का निर्माण करके पुनः आपका चातुर्मास चैन्नई में करवाना है। और वह चातुर्मास ट्रस्ट के अपने स्थल में ही करवाना है।

हमारा ट्रस्ट High Speed में चलने का आदी हो चुका है और मुझे पूरा विश्वास है कि कहानी का दूसरा भाग भी शीघ्र सम्पन्न होगा और हम नये आयाम स्थापित करेंगे। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे गुरुदेव के मार्गदर्शन में गच्छ और शासन के राष्ट्रीय स्तर के कार्यों में भी जुड़ने का अवसर प्राप्त होता है। गुरुदेव से चर्चा करना, निर्देश लेना, सुझावों की सहज स्वीकृति, आपकी दीर्घ एवं व्यापक सोच, आपश्री के हर निर्णय योजनाबद्ध विकास और दूरदर्शिता से प्रेरित होते हैं। आपकी निश्रा में कार्य करने में अत्यन्त ही आनंद का आभास होता है।

(शेष पृष्ठ 35 पर)

ऐसे है हमारे आचार्यश्री!

सौ. अरुणा मुणोत, चेन्नई

जैसे सूरज मुस्काया हो
जैसे बरगद की छाया हो,
जैसे मानव देह प्राप्त कर
कोई पुण्य उतर आया हो,
ऐसे है हमारे आचार्य श्री!

जैसे अम्बर की ऊँचाई
जैसे सागर की गहराई,
जैसे दूर दूर खेतों पर,
हँसती हरियाली हो छाई,
ऐसे है हमारे आचार्य श्री!

जैसे रिश्तों का आँगन हो,
जैसे कोई चन्दन वन हो,
जैसे मुनियों की वाणी का,
त्याग भरा कोई जीवन हो,
ऐसे है हमारे आचार्य श्री !

जैसे सुर से तान मिला हो,
जैसे सुन्दर कमल खिला हो,
जैसे सबकी रक्षा खातिर,
कहीं कोई, अभेद्य किला हो,
ऐसे है हमारे आचार्य श्री!

जैसे सरल प्रेम की भाषा,
जैसे सब के शुभ की आशा,
जैसे स्नेह लुटाता कोई,
सम्बंधों की हो परिभाषा,
ऐसे है हमारे आचार्य श्री!

जीवन का सम्मान भरा हो
कर्म कर्म में दान भरा हो,
और आचरण ऐसे जैसे,
सांस सांस में ज्ञान भरा हो .
ऐसे है हमारे आचार्य श्री !

जिनमें केवल है अच्छाई,
जिनमें केवल है सच्चाई,
जो माया के बीच रहे पर,
माया जिनको बाँध ना पाई,
ऐसे है हमारे आचार्य श्री!

सब को लेकर साथ बहे जो
मिलकर हर दुख दर्द सहे जो,
जीवन की इस कर्मभूमि में,
धर्म ध्वजा की तरह रहे जो,
ऐसे है हमारे आचार्य श्री!

बिना द्वेष है ,बिना द्वंद है,
सच्चाई के मधुर छंद है,
मणि की तरह ही कीमती,
सचमुच ही वे मणिप्रभ है,
ऐसे है हमारे आचार्य श्री!

दृढ़ विचार के, सीधे मन के,
सत्यनिष्ठ, साधक चिंतन के,
जा कर हर धरा धरा पर,
बने हितैषी जो जन जन के,
ऐसे है हमारे आचार्य श्री !

वे विशुद्ध है, वे विराट है
ज्यूँ गंगा के पुण्य घाट है,
जीवन की दुर्गम राहों पर,
सबसे पहले बढे हाथ है,
ऐसे है हमारे आचार्य श्री!

सबको याद रहेंगे हरदम,
बनकर अश्रु बहेंगे हरदम,
आचार्य श्री और ना कोई,
सब यह बात कहेंगे हरदम,
ऐसे है हमारे आचार्य श्री !

चेन्नई में आत्मस्पंदन उपधान तप की आराधना संपन्न

चेन्नई नगर में पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव युगदिवाकर गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मुकुन्दप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मृणालप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मुकुलप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री महर्षिप्रभसागरजी म. पूज्य बाल मुनि श्री मीतप्रभसागरजी म. ठाणा 9 एवं पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री चंपाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 13 व पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 8 आदि 30 साधु साध्वी भगवंतों की पावन निश्रा व सानिध्य में महामंगलकारी आत्म स्पंदन उपधान तप की आराधना अत्यन्त आनंद मंगल व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

श्री मुनिसुव्रत जिनकुशलसूरि जैन ट्रस्ट के तत्वावधान में अयनावरम् दादावाडी परिसर में उपधान तप का प्रारंभ 28 सितम्बर 2023 को हुआ था। इस उपधान तप में 171 श्रावक श्राविकाओं ने आराधना की, जिनमें 45 श्रावक व शेष श्राविकओं ने भाग लिया। उपधान तप के मुख्य लाभार्थी बने मूल नागोर निवासी श्री प्रसन्नचंदजी विमलेशजी डागा परिवार!

उपधान तप के माल महोत्सव के निमित्त पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया। ता. 13 को परमात्मा महावीर के निर्वाण कल्याणक के उपलक्ष्य में वीर विरह कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया, जिसका संचालन बंधु बेलडी मोहनजी मनोजजी गुलेच्छा ने किया।

ता. 14 को नूतन वर्ष के महामांगलिक गौतमस्वामी के रास का वांचन हुआ। साथ ही उपधान तप के तपस्वियों का विदाई समारोह आयोजित हुआ, जिसका संचालन अहमदाबाद से पधारे भाविक शाह व गुंटुर के विलेश जैन ने किया।

ता. 15 को भव्य वरघोडा आयोजित हुआ। वरघोडे में पूरा चेन्नई नगर उमड पडा था। ता. 16 नवम्बर को मोक्ष माला महोत्सव का भव्य कार्यक्रम संपन्न हुआ। प्रथम मोक्ष माला का लाभ श्री विमलेशजी डागा ने धारण की। जबकि दूसरी मोक्षमाला उनकी धर्मपत्नी सौ. सपनादेवी डागा ने धारण की।

सभी उपधान तप के तपस्वियों को पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री ने मोक्षमाला धारण करवाई। चेन्नई के इतिहास में इस वर्ष का शासनोत्कर्ष वर्षावास तथा आत्मस्पंदन उपधान जन जन की जुबां पर छा गया है।

चिंतादरी पेठ चैन्नई चुनाव सम्पन्न

चैन्नई चिंतादरी पेठ के जैन श्वे. मूर्तिपूजक श्रीसंघ के सर्व सम्मति से चुनाव होकर कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसमें श्री एन. गौतमचंदजी बैद को अध्यक्ष चुना गया। उपाध्यक्ष एन. गौतमचन्दजी कोठारी, सुनीलजी बैद-मंत्री, संजय भुरट-सहमंत्री, अशोक बैद-कोषाध्यक्ष व किशनचंदजी कटारिया सह-कोषाध्यक्ष चुने गये।

दशवैकालिक योग सम्पन्न

पू. गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में दो मुनियों व दो साध्वियों के दशवैकालिक योग की साधना सम्पन्न हुई।

रायपुर में दीक्षित पू. मुनि श्री महर्षिप्रभसागरजी म. तथा तिरपातुर में दीक्षित पू. बालमुनि श्री मीतप्रभसागरजी म. ने तथा पालीताना में दीक्षित पू. साध्वी श्री प्रियदिशांजनाश्रीजी म. व गुंटुर में दीक्षित पू. साध्वी श्री गीतार्थप्रभाश्रीजी म. ने 15 दिवसीय योग साधना संपन्न की। पू. आचार्यश्री ने वांचना पूर्वक अनुज्ञा प्रदान की।

चेन्नई में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न

चेन्नई नगर में श्री मुनिसुव्रत जिनकुशलसूरि जैन ट्रस्ट द्वारा नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मुकुन्दप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मृणालप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मुकुलप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री महर्षिप्रभसागरजी म. पू. बाल मुनि श्री मीतप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 13 तथा पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. व पू. साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 8 की पावन सानिध्य में अत्यन्त हर्ष व उल्लास के साथ संपन्न हुई।

महोत्सव का प्रारंभ ता. 3 दिसम्बर 2023 को नूतन जिन बिंबों व पूज्यश्री के प्रवेश के साथ हुआ। राजगृही नगर, गौतम शालिभद्र नगर का उद्घाटन हुआ। वेदिका पूजन, कुंभ स्थापना, दीपस्थापना आदि पूजाऐं हुई। पूज्य आचार्यश्री ने नंद्यावर्त पूजन किया। शाम को परमात्मा का च्यवन कल्याणक विधान संपन्न हुआ। रात्रि में च्यवन कल्याणक महोत्सव संपन्न हुआ। परमात्मा के माता पिता बने श्री लक्ष्मीराजजी सौ. सुशीलादेवी बच्छावत व इन्द्र इन्द्राणी बने श्री चन्द्रप्रकाशजी सौ. जूलीदेवी कोठारी!

विधि विधान के साथ ता. 7 दिसम्बर को भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ। दीक्षा कल्याणक विधान से पूर्व ध्वजा, स्वर्णकलश व बिराजमान आदि के चढावे संपन्न हुए।

ता. 8 दिसम्बर को परमात्म भक्ति के दिव्य ऊर्जा भरे वातावरण में परमात्मा मुनिसुव्रतस्वामी आदि बिंबों की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। ध्वजा लहराई गई।

दो मंजिले इस मंदिर का निर्माण मात्र छह महिने में पूर्ण हुआ। डेढ नंबर के उज्ज्वल धवल संगमरमर के उत्तम नक्काशी युक्त पाषाणों व स्तंभों से इस मंदिर का निर्माण हुआ।

ऊपर मंदिर में परमात्मा मुनिसुव्रतस्वामी, पार्श्वनाथ, मल्लिनाथ, सीमंधरस्वामी व गौतम स्वामी की प्रतिमाऐं प्रतिष्ठित की गई। साथ ही देवकुलिकाओं में नाकोडा भैरव व पद्मावती देवी को बिराजमान किया गया।

नीचे दादावाडी में मूलनायक के रूप में दादा जिनकुशलसूरि की प्रतिष्ठा की गई। साथ ही दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि, मणिधारी जिनचन्द्रसूरि की प्रतिमाऐं गर्भगृह में बिराजमान की गई। बाहर देवकुलिकाओं में खरतरबिरुदधारक आचार्य जिनेश्वरसूरि, दादा जिनचन्द्रसूरि, घंटाकर्ण महावीर, अंबिकादेवी व काला गोरा भैरव की प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा की गई।

कायमी ध्वजा का लाभ श्री हस्तीमलजी दिलीपजी बंदा मुथा परिवार ने लिया। जबकि स्वर्ण कलश का लाभ धोरीमन्ना निवासी श्री हिन्दुमलजी हमीरमलजी लूणिया परिवार ने लिया।

बिराजमान लाभार्थी-

मूलनायक श्री मुनिसुव्रतस्वामी- श्रीमती मोहिनीदेवी समरथमलजी रांका परिवार, गोल उम्मेदाबाद

श्री पार्श्वनाथ- पदमकुमारजी प्रवीणकुमारजी टाटिया परिवार, तिवरी

श्री मल्लिनाथ- श्री सोहनलालजी राजकुमारजी लूणावत परिवार, नागोर

श्री सीमंधरस्वामी- श्री कन्हैयालालजी सुभाषचंदजी रांका जैतारण वाले
श्री गौतमस्वामी- श्रीमती धवलीदेवी मांगीलालजी रांका, गोल उम्मेदाबाद
मूलनायक दादा जिनकुशलसूरि- श्रीमती मोहिनीदेवी समरथमलजी रांका परिवार, गोल उम्मेदाबाद
दादा जिनदत्तसूरि- श्री कन्हैयालालजी सुभाषचंदजी रांका जैतारण वाले
मणिधारी दादा जिनचन्द्रसूरि- श्री सागरमलजी पुखराजजी कोठारी, नागोर
आचार्य जिनेश्वरसूरि- श्री प्रकाशचंदजी बसंतीदेवी कटारिया, बिलाडा
दादा जिनचन्द्रसूरि- श्री नेमीचंदजी राजेशजी कटारिया, पादरू
नाकोडा भैरव- श्री ताराचंदजी विजयराजजी कोठारी
घंटाकर्ण महावीर- श्री अशोककुमारजी चंदनमलजी छाजेड, डुठारिया
पद्मावती देवी- श्रीमती विमलादेवी निहालचंदजी ललवानी, तिरपातूर
अंबिकादेवी- श्री टीकमचंदजी मनीषजी बोथरा
काला भैरव- श्रीमती पूसीबाई आशकरणजी गोलेच्छा, फलोदी
गोरा भैरव- श्री प्रसन्नचंदजी विमलेशजी डागा, नागोर
मंदिर में महालक्ष्मी- श्री अभयकुमारजी महेन्द्रकुमारजी कोठारी, फलोदी
दादावाडी में महालक्ष्मी- श्री अर्जुनराजजी लक्ष्मीचंदजी बच्छावत, नागोर

ता. 9 दिसम्बर को द्वारोद्घाटन किया गया। जिन मंदिर के द्वारोद्घाटन का लाभ श्री कन्हैयालालजी टिकमचंदजी मनीषजी बोथरा ने लिया। जबकि दादावाडी के द्वारोद्घाटन का लाभ श्री रिषभराजजी रमेशकुमारजी अभय बाफना ने लिया।

पूज्यश्री के गुरु पूजन का लाभ श्रीमती मोहिनीदेवी समरथमलजी रांका परिवार, गोल उम्मेदाबाद ने लिया। कामली का लाभ मोकलसर निवासी संघवी श्रीमती शांतिदेवी पुखराजजी तेजराजजी गोलेच्छा परिवार बैंगलोर वालों ने लिया।

लाभार्थी परिवारों का ट्रस्ट द्वारा अभिनंदन किया गया। इस प्रतिष्ठा को सफल बनाने के लिये विविध समितियाँ बनाई गई थी। उन सभी का बहुमान किया गया। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् चेन्नई शाखा का ट्रस्ट द्वारा बहुमान किया गया।

विधि विधान मक्षी निवासी हेमंतभाई बैद मुथा व संजय भाई ने करवाया। जबकि संगीतकार के रूप में विनीत गेमावत ने अपनी प्रस्तुति दी।

बहुमान

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में श्री मुनिसुव्रत जिनकुशलसूरि जैन ट्रस्ट, चेन्नई द्वारा डॉ. श्री विनम्रजी धारीवाल, डॉ. श्रीमती प्रियदर्शना जैन, सुश्री डॉ. निर्मला बरडिया व पं. श्री प्रज्ञेश जैन का बहुमान किया गया।

डेन्टिस्ट श्री विनम्रजी ने चातुर्मास में साधु साध्वियों की वैयावच्च सेवा चिकित्सा का पूरा लाभ लिया। डॉ. प्रियदर्शनाजी जैन व डॉ. निर्मला बरडिया ने मुनियों व साध्वियों को चातुर्मास काल में प्रकरण, भाष्य, कर्मग्रन्थ, तत्वार्थ आदि का अभ्यास कराया। साथ ही पं. श्री प्रज्ञेश जैन ने संस्कृत आदि का अभ्यास कराया।

धर्मनाथ मंदिर में त्रिदिवसीय महोत्सव

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणिवर श्री मयंकप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 9 एवं पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 13 तथा पूजनीया साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 8 के पावन सानिध्य में श्री धर्मनाथ जैन मंदिर में त्रिदिवसीय परमात्म भक्ति महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।

पूज्यवरों का मंगल प्रवेश ता. 21 नवम्बर को संपन्न हुआ। अपोलो हॉस्पीटल मिन्ट स्ट्रीट से शोभायात्रा का प्रारंभ हुआ, धर्मनाथ मंदिर के पास श्री जिनदत्तसूरि जैन धर्मशाला में मंगल प्रवचन हुआ।

परमात्मा के अठारह अभिषेक का कार्यक्रम हुआ। ता. 22 को मोक्षमाला परिधान के साथ मंगल प्रवचन हुआ। ता. 23 को वर्धमान शक्रस्तव अभिषेक हुआ।

समस्त समारोह का लाभ पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म.सा. व पूजनीया साध्वी श्री प्रियमुद्रांजनाश्रीजी म. के सांसारिक परिवार मूल फलोदी वर्तमान में चेन्नई निवासी वीर माता पुष्पाबाई वीर पिता श्री बस्तीचंदजी श्रीमती लीलाबाई महेन्द्रकुमारजी श्रीमती आशादेवी श्री महिपालजी नमन जिनेश समस्त कानूगा परिवार ने लिया।

श्री जिनदत्तसूरि जैन मंडल के अध्यक्ष एम. के. कोठारी ने पूज्यवरों का अभिनंदन किया। प्रतिदिन पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. द्वारा संध्या भक्ति हुई, जिसमें श्रद्धालुओं ने परमात्मा में लयलीन होने का अपूर्व आनंद लिया।

बैंगलोर में श्रीमती शोभा कोटडिया दीक्षा लेंगे

तिरूच्चिरापल्ली निवासी श्रीमती शोभा कोटडिया संसार के समस्त साधनों व सुखों का त्याग कर जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करने जा रहे हैं।

लगभग 8 वर्षों से दीक्षा की भावना उनकी अब साकार होने जा रही है। उनके परिवार ने पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री को उन्हें दीक्षा प्रदान करने की विनंती की। शोभा कोटडिया ने दीक्षा प्रदान करने की प्रार्थना की, जिसे स्वीकार करते हुए पूज्यश्री ने 11 फरवरी 2024 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। यह भागवती दीक्षा बैंगलोर में मागडी रोड प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर संपन्न होगी।

श्रीमती शोभाजी पू. गणिनीप्रवराश्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. के पास संयम शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

सेलम में सुश्री पूजा पारख तथा दिव्या आबड की भागवती दीक्षा

सेलम नगर में संघ गौरव श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी रतनचंदजी कवाड परिवार द्वारा निर्मित श्री सीमंधर स्वामी परमात्मा के जिन मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर सेलंबा निवासी 26 वर्षीया कुमारी पूजा पारख व कुमारी दिव्या आबड की भागवती दीक्षा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न होगी। श्री मोहनलालजी सौ. मधुदेवी पारख की सुपुत्री सुश्री पूजा पारेख व चांदवड निवासी श्री सौ. पिंकी देवी आबड की सुपुत्री कुमारी दिव्या आबड पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में ज्ञानाभ्यास कर रही है। चेन्नई उपधान माला के पावन अवसर पर सुश्री पूजा व उनके परिवार के द्वारा संयम मुहूर्त्त प्रदान करने का निवेदन करने पर पूज्य आचार्यश्री ने ता. 21 जनवरी 2024 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। इसी प्रकार ता. 24 को धर्मसभा में सुश्री दिव्या आबड व परिवार द्वारा विनंती करने पर 21 जनवरी का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। इसी दिन परमात्मा की प्रतिष्ठा एवं पू. साध्वी श्री प्रियमितांजनाश्रीजी म. बडी दीक्षा भी संपन्न होगी।

पूज्यश्री का चेन्नई से विदाई समारोह

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 9 तथा पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 8 के ऐतिहासिक चातुर्मास, उपधान तप आराधना तथा अंजनशलाका प्रतिष्ठा आदि विविध समारोहों के पश्चात् विहार की वेला में श्री मुनिसुव्रत जिनकुशलसूरि जैन ट्रस्ट, वेपेरी चेन्नई द्वारा कृतज्ञता समारोह का आयोजन किया गया। समारोह को पूज्य आचार्यश्री आदि मुनिमंडल के साथ पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की सानिध्यता प्राप्त हुई।

ता. 17 दिसम्बर 2023 को दोपहर 2 बजे आयोजित इस समारोह में जनसमूह उमड पडा था। गौतम किरण का विशाल प्रांगण छोटा पड रहा था। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री भागचंदजी रांका, उपाध्यक्ष श्री सुभाषचंदजी रांका, श्री नेमीचंदजी कटारिया, ट्रस्ट के महामंत्री व प्रतिष्ठा संयोजक श्री पदमचंदजी टाटिया, चातुर्मास संयोजक श्री सुरेशजी लूणिया, उपधान संयोजक मनोज गोलच्छा, भूपेश रांका, जिनदत्तसूरि जैन मंडल के अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी कोठारी, श्री चन्द्रप्रभ जूना मंदिर के महामंत्री श्री मुकेशजी गोलेच्छा, सिवांची जैन संघ के मंत्री श्री अशोकजी खतंग, केयुप चेन्नई के मंत्री श्री संजयजी बैद, सुश्री आरती लूणिया, वैयावच्च प्रेमी सुरेशजी गुलेच्छा, श्रीमती अंजु झाबक, श्रीमती नीलमजी बैद आदि ने इस चातुर्मास की ऐतिहासिकता का विवेचन किया। पूज्यश्री के उपकारों का वर्णन करते हुए उनके प्रवचनों व सरल सहज स्वभाव की अनुमोदना की।

डॉ. अरुणा मुणोत ने स्वरचित कविता द्वारा पूज्यश्री के दिव्य व्यक्तित्व को रेखांकित किया। सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व श्री मोहनजी गोलेच्छा के विदाई गीत ने सभी की आंखों को आर्द्र कर दिया। सुश्री कोमल गुलेच्छा फलोदी, श्रीमती विमलाजी छाजेड, सुश्री देशना बच्छावत ने विदाई गीत प्रस्तुत किये।

पूज्य गुरुदेवश्री ने यहाँ के श्री संघ की अनुमोदना करते हुए कहा- चेन्नई के इस वातावरण को कभी भूल नहीं सकते। सबसे अनुमोदना की बात यह रही कि इस चातुर्मास में खरतरगच्छ, तपागच्छ, आंचलगच्छ, तीन थुई, स्थानकवासी, तेरापंथी सकल श्री संघ ने पूरा लाभ लिया। जैनत्व की एकता के इस संदेश की जितनी अनुमोदना की जाय, कम है। उन्होंने ट्रस्ट को एक होकर कार्य करने की व संघ को मजबूत करने की प्रेरणा दी।

पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. ने चातुर्मास की विशिष्टताओं का वर्णन किया। चेन्नई नंदन पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ने कहा- विदाई शब्द उचित नहीं क्योंकि विदाई न तो आप दे सकते हैं, न हम ले सकते हैं। यह समारोह तो कृतज्ञता का है।

केयुप केलेण्डर-2024 का विमोचन

पिछले 10 वर्षों से लगातार प्रकाशित हो रहे केयुप केलेण्डर के इस वर्ष के संस्करण का विमोचन पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में श्री मुनिसुव्रत जिनकुशलसूरि जैन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री भागचंदजी रांका व ट्रस्टी गण, केयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश लूणिया, केयुप चेन्नई के अध्यक्ष राजेश कटारिया आदि द्वारा किया गया। केयुप केलेण्डर का संकलन बैंगलोर केयुप के श्री विक्रम गोलेच्छा ने किया।

केयुप का चुनाव संपन्न

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् चेन्नई शाखा का चुनाव पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री की निश्रा में सर्वसम्मति से संपन्न हुआ। सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी की घोषणा की गई।

सलाहकार- श्री सुरेशजी लूणिया, महेन्द्रजी गोलेच्छा, मनोजजी झाबक व राजकुमारजी संकलेचा।

श्री राजेशजी कटारिया- अध्यक्ष, श्री धीरज बोथरा- वरिष्ठ उपाध्यक्ष, उपाध्यक्ष- श्री विमलेश डागा, श्री अशोक बैद, श्री चेतन रांका, श्री संजय बैद- महामंत्री, जितेन्द्र सेठिया- सहमंत्री, श्री गौतम बच्छावत- कोषाध्यक्ष, श्री राजेश धारीवाल- सहकोषाध्यक्ष, ज्ञान वाटिका प्रकोष्ठ संयोजक- संतोष बरडिया, सहसंयोजक- संजय पारख, जीतु गोलेच्छा,विहार सेवा प्रकोष्ठ संयोजक- अनिल कटारिया, सहसंयोजक- पवन बोथरा, वैयावच्च प्रकोष्ठ संयोजक- तरूण डाकलिया, सहसंयोजक- प्रतीक गुलेच्छा, प्रचार प्रसार प्रकोष्ठ संयोजक- अनिकेत टाटिया, सह संयोजक- हरीश बोथरा, राजेश रांका।

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री ने सभी सदस्यों को मंगल आशीर्वाद देते हुए शासन व गच्छ के कार्य रूचिपूर्वक करने की प्रेरणा दी।

चेन्नई केएमपी का गठन

चेन्नई में अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् की शाखा का गठन हुआ।

श्रीमती अनिता सोलंकी- अध्यक्ष, श्रीमती ऊषा डोसी- वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्रीमती विमला छाजेड, श्रीमती मल्ली बरडिया व श्रीमती चंद्रा रांका- उपाध्यक्ष, श्रीमती शिमला कटारिया- महामंत्री, श्रीमती अंजु झाबक व श्रीमती प्रफुल्ला गोलेच्छा- सह मंत्री, श्रीमती सपना डागा- कोषाध्यक्ष, श्रीमती प्रतिभा जीरावला- सह कोषाध्यक्ष, ज्ञान वाटिका समिति में श्रीमती नम्रता कवाड, श्रीमती रेशमा बैद, श्रीमती डोली बोथरा, श्रीमती नीलम बैद व श्रीमती टीना बैद को लिया गया।

कार्यकारिणी सदस्य- श्रीमती सुशीला बच्छावत, श्रीमती प्रमिला टाटिया, श्रीमती सुशीला लूणिया, श्रीमती भागवंती रांका, स्नेहा कोठारी, श्रीमती रंजना कानूगो, श्रीमती सुशीला लूणावत, श्रीमती प्रकाशकुमारी रांका, श्रीमती जूली कोठारी, श्रीमती सीमा छाजेड।

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री ने सभी को एक होकर हिल मिलकर गच्छ हित में कार्य करने की प्रेरणा दी।

श्रीमती जीवनदेवी देवराजजी गुलेच्छा जीवित महोत्सव

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में चेन्नई नगर में श्रीमती जीवनदेवी देवराजजी गुलेच्छा के जीवित महोत्सव के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय समारोह का आयोजन किया गया।

ता. 15 दिसम्बर को गुलेच्छा परिवार द्वारा निर्मित श्री सीमंधर स्वामी मंदिर महाविदेह में अठारह अभिषेक का कार्यक्रम रखा गया। रात्रि में भक्ति का कार्यक्रम रखा गया। ता. 16 दिसम्बर को प्रवचन के पश्चात् चूले श्री चन्द्रप्रभस्वामी मंदिर दादावाडी उपाश्रय में श्री सिद्धचक्र महापूजन पढाया गया। ता. 17 दिसम्बर को एसपीआर के विशाल हॉल में जीवराशि क्षमापना का आयोजन किया गया। पू. आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म., युगोदयप्रभसूरीश्वरजी म. आदि का तथा पूजनीया साध्वी श्री विरतिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा तथा गुलेच्छा परिवार की कुलदीपिकाऐं पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ।

पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री ने भव आलोयणा का विधिविधान करवाया। इसके लिये नांद की स्थापना की गई। उसी समय श्रावक प्रवर श्री मोहनजी गुलेच्छा व उनकी धर्मपत्नी ने विधि पूर्वक चतुर्थ व्रत ग्रहण किया। अपनी माताजी के श्रीचरणों में यह अनूठी भेंट उन्होंने अर्पण की।

श्री मोहनजी मनोजजी ने पद्मावती आलोयणा का विस्तार से संगीतमय विवेचन कर उपस्थित विशाल जनसमूह को रोमांचित कर दिया।

इस अवसर पर गुलेच्छा परिवार ने अपनी माताजी के श्रीचरणों में डेढ लाख सामायिक व डेढ करोड नवकार जाप का संकल्प लिया। इस प्रकार की भेंट पहली बाद देखने को मिली, जिसकी उपस्थित जन समूह ने भूरि भूरि अनुमोदना की।

मंच संचालन श्री मनोजजी राठोड ने किया। फलोदी की सुश्री कोमल गुलेच्छा ने प्रभु भक्ति के भजन प्रस्तुत किये।

50वीं ओली का पारणा संपन्न

पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. की निश्रावर्ती पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के वर्धमान तप की 50वीं ओली का पारणा कार्तिक शुक्ल 6 ता. 19 नवम्बर 2023 को सानन्द संपन्न हुआ। सांचोर नगर में चातुर्मास के कालखण्ड में अपने संयम के 51 वें वर्ष में पूजनीया बहिन म. ने दो ओली की आराधना की। ओलीजी के निमित्त पाली व भिवंडी में विभिन्न भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया।

पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री ने शुभकामनाऐं अर्पण करने के साथ उनकी तपस्या की भूरि भूरि अनुमोदना की।

पालीताणा
ऋषभ धुन लागी चौविहार छठ सात यात्रा की भव्य सफलता

ऋषभ धुन लागी

ट्रस्ट मंडल चेन्नई द्वारा हस्तलिखित ग्रन्थ समर्पण

मुस्कुराते हुए पूज्यश्री

कानूगा परिवार अभिषेक के लिये तत्पर

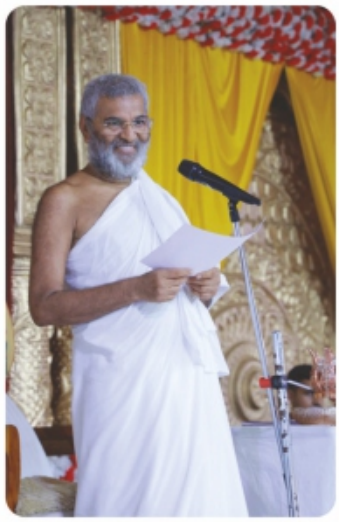

आत्मस्पन्दन उपधान मोक्षमाला चेन्नई के सुनहरे पल

प्रथम माला धारण करते हुए विमलेशजी डागा

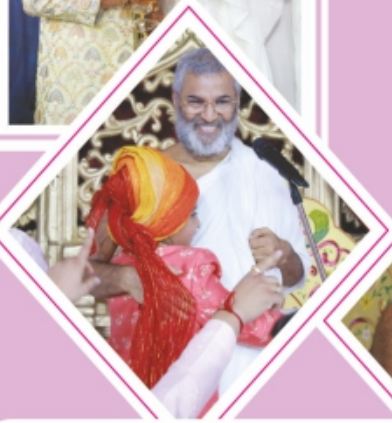

उपधान मुख्य लाभार्थी डागा परिवार का बहुमान

चातुर्मास मुख्य लाभार्थी रांका परिवार का बहुमान

चातुर्मास, उपधान एवं प्रतिष्ठा के तीनों संयोजकों की जोड़ी

मुनिसुव्रत मन वसियो प्रतिष्ठा पत्रिका पूज्यश्री को अर्पण करते हुए

चेन्नई महानगर में
आत्मस्पन्दन उपधान में हमारे परिवार के तपस्वी

शुभ आशीर्वाद

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक, युग दिवाकर
खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

प. पू. साध्वी
श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा.

प. पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.

प. पू. साध्वी
श्री अभिनंदिताश्रीजी म.सा.

कु. चंचल मनोजकुमारजी बागरेचा

कु. दिशा गौतमचंदजी बागरेचा

कु. दिव्या राजेन्द्रकुमारजी बागरेचा

अनुमोदक

जयंतिलाल, पृथ्वीराज, महेन्द्रकुमार, राजेन्द्रकुमार, मनोजकुमार
गौतमचंद एवं समस्त जिनाणी बागरेचा परिवार (गढ़ सिवाना-चेन्नई)

फर्म : Manoj Stainless Kanchan Enterprises Rishab Enterprises M R Agencies Arihant Hardwar, Chennai

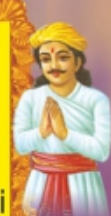

बेंगलोर महानगर के मागड़ी रोड़ के प्रांगण में

जिन बिम्ब-गुरु बिम्ब एवं देवदेवी बिम्ब की
महामंगलकारी अजंनशलाका प्रतिष्ठा एवं दीक्षा महोत्सव में
पधारने का सादर सस्नेह आमंत्रण

प्रभु बनने का कसौटी भरा मार्ग

नंदी सया संजमे

शोभा की आत्मशोध यात्रा

महाव्रत संकल्प
माघ सुदि 2, रविवार
11 फरवरी 2024

महाव्रत संरक्षिका
प.पू. गणिनी प्रवरा खान्देश ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.
प.पू. खान्देशरत्ना श्री पूर्णप्रभाश्रीजी (भागु म.)

पावन निश्रा
पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक, युग दिवाकर
खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
आदि श्रमण श्रमणी वृन्द

महोत्सव प्रारंभ
7th FEB. 2024

मंगलकारी प्रतिष्ठा
11th FEB. 2024

आयोजक–निमंत्रक

श्री सुमतिनाथ जैन श्वेताम्बर संघ

मागडी रोड़, बेंगलोर

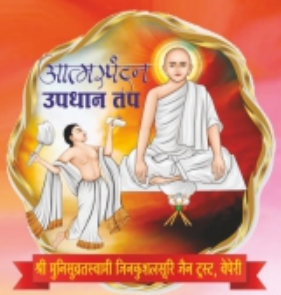

चेन्नई महानगर में
आत्मस्पन्दन उपधान में हमारे परिवार के तपस्वी

शुभ आशीर्वाद

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक, युग दिवाकर

खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

प्रणयराज कटारिया

;प्रपौत्र-स्व. श्रीमती भंवरीदेवी-स्व. श्री फूलचन्दजी कटारिया

सुपौत्र-स्व. श्रीमती रतनदेवी-स्व. श्री मंगलचन्दजी कटारिया

अनुमोदक

प्रसन्नचंदजी कटारिया (पिता), श्रीमती शंकुन्तलादेवी कटारिया (माता)

प्रणयराज, अर्चना, आदेश, अर्नय कटारिया परिवार

मरुधर में रुण-चेन्नई

श्री मुनिसुव्रत मन वसियो चेन्नई में प्रतिष्ठा संपन्न

श्री मुनिसुव्रत मन वसियो चेन्नई में प्रतिष्ठा संपन्न

पानी देवी छाजेड का जीवित महोत्सव सम्पन्न

विदाई समारोह में पूज्यश्री निश्रा प्रदान करते हुए

केयुप कैलेण्डर का विमोचन करते हुए

तिरुपातुर में समारोह सम्पन्न

चेन्नई महानगर में
आत्मस्पन्दन उपधान में हमारे परिवार के तपस्वी

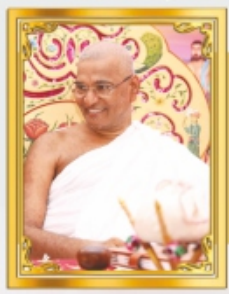

शुभ आशीर्वाद

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक, युग दिवाकर

खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

श्रीमती सरिता

धर्मपत्नी सुनील डोशी

(पुत्र वधु : स्व. श्रीमती सुशीलादेवी-प्रेमचंद डोशी)

(सुपुत्री : स्व. श्रीमती सुरजदेवी-स्व. श्री नंदलालजी कटारिया)

श्रीमती ममता

धर्मपत्नी कपिल डोशी

(पुत्र वधु : स्व. श्रीमती विमलादेवी-स्व. श्री माणकचंदजी डोशी)

(सुपुत्री : श्रीमती ललीतादेवी-श्री विमलेशजी सिंघवी)

अनुमोदक

प्रेमचन्द, विजयराज, पदमचन्द, कमलचन्द, धर्मचन्द, उत्तमचन्द, हंसराज, सुनिल, कपिल, कुशल, रवि, अशोक, अभिषेक, ज्ञानेश, मोहित, हार्दिक भाविक, वंश, भव्य, प्रित एवं समस्त डोशी परिवार

चेन्नई

श्री ढड्ढा एण्ड को. गोल्डन जुबली ट्रस्ट ने शिक्षा व्यवस्था के लिये दिया 20 करोड का दान

ढड्ढा एण्ड को गोल्डन जुबली ट्रस्ट, चेन्नई ने आने वाले 3 वर्षों में शिक्षा संस्था को स्थापित करने के लिये 20 करोड रूपये की विशाल राशि अर्पण की है। संस्था की बैठक में यह निर्णय किया गया। वर्तमान में संस्था के अध्यक्ष श्री मोहनचंदजी ढड्ढा ने यह जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि इस ट्रस्ट की स्थापना 1963 में श्री लालंचदजी ढड्ढा ने की थी। वर्तमान में यह ट्रस्ट मुख्य रूप से शिक्षा के क्षेत्र में अलग अलग शिक्षा संस्थाओं में पुस्तकालय, छात्रावास, कक्षा कमरों आदि के निर्माण में दान कर रहा है। वर्ष 1977 में संस्था ने अपने तत्वावधान में उच्च माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की, जो एक एकड के विशाल भूखण्ड पर चेन्नई में स्थित है। इस विद्यालय का नाम स्व. श्री मिलापंचदजी की स्मृति में 'लालचंद मिलापचंद ढड्ढा उच्च माध्यमिक विद्यालय रखा गया। श्री मिलापचंदजी ढड्ढा इस संस्था के संस्थापकों में से एक थे व श्री लालचंदजी के बडे सुपुत्र थे। इस विद्यालय में लगभग 1800 छात्र विद्याध्ययन कर रहे हैं।

इस संस्था द्वारा राजस्थान के ऐतिहासिक नगर श्री ओसियांजी में लालचंद मिलापचंद ढड्ढा जैन महाविद्यालय कॉलेज के निर्माण में 5 करोड रूपये की राशि अर्पण की।

इस संस्था के तत्वावधान में संस्थापक श्री लालचंदजी के सुपुत्र श्री मोहनचंदजी ढड्ढा द्वारा अपनी जन्मभूमि फलोदी राजस्थान में वर्ष 2018-2019 में एक विद्यालय की स्थापना की। जो आज लालचंद मिलापचंद ढड्ढा विद्यालय के नाम से चल रहा है, जिसमें आधुनिक नवीनतम तकनीक के साथ पढाई संपन्न होती है। इस विद्यालय के निर्माण में संस्था द्वारा 15 करोड रूपये की राशि का निवेश किया गया।

यह संस्था ढड्ढा परिवार द्वारा ही गतिमान् है। अन्य किसी भी स्रोत से राशि संग्रह नहीं की जाती। शिक्षा के क्षेत्र में इतनी विपुल राशि के निवेश की घोषणा से समाज में हर्ष व अनुमोदना का वातावरण निर्मित हुआ है।

आदिनाथ ट्रस्ट में चातुर्मास परिवर्तन

पू. गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा 9 तथा पू. गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म., साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 8 व पू. साध्वी प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म., साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म आदि ठाणा 8 का चातुर्मास परिवर्तन ता. 27 नवम्बर 2023 को चूले स्थित आदिनाथ जैन ट्रस्ट में संपन्न हुआ।

आदिनाथ जैन ट्रस्ट द्वारा सामैया किया गया। आचार्य के गुणों के आधार पर 36 गहुँलियाँ सजाई गई।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने प्रवचन फरमाते हुए श्री सिद्धाचल तीर्थ की महिमा का वर्णन किया।

बंधुबेलड़ी मोहनजी मनोजजी गुलेच्छा ने भक्ति संगीत के माध्यम से श्री सिद्धाचल तीर्थ की भाव यात्रा करवाई, जिसे श्रवण कर उपस्थित जन समूह रोमांचित हो उठा व भक्ति भावों से भरकर साक्षात् यात्रा का अनुभव करने लगा।

श्रेष्ठिवर श्री मनोजजी गुलेच्छा के वर्धमान तप की लगातार 78-79 वीं ओलीजी के समापन के उपलक्ष्य में सम्पन्न हुआ।

श्री चिंतादरी पेठ में प्रतिष्ठा

पूज्य गुरुदेव खरतर-गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की पावन निश्रा में चिंतादरी पेठ स्थित श्री महावीर स्वामी जिनमंदिर में गणधर गौतम स्वामी व दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की प्रतिमा की चल प्रतिष्ठा मिगसर वदि 13 रविवार ता. 10 दिसम्बर 2023 को शुभ मुहूर्त्त में सम्पन्न हुई।

श्री गौतम स्वामी की प्रतिष्ठा का लाभ श्रीमती चंचलबाई किशनचंदजी कटारिया खारिया मीठापुर वालों ने तथा गुरुदेव की प्रतिष्ठा का लाभ फलौदी निवासी श्री सुखलालजी मिश्रीलालजी गौतमचंदजी बैद ने लिया।

चिंतादरीपेठ में भूमिपूजन-खातमुहूर्त्त संपन्न

चैन्नई महानगर के चिंतादरीपेठ के प्रांगण में परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की प्रेरणा व निर्देशन में जीर्णोद्धारशील श्री महावीर स्वामी के जिनमंदिर का भूमिपूजन-खातमुहूर्त्त दिनांक 29-11-2023 को पूज्य गच्छाधिपतिश्री के शिष्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं बालमुनि श्री मीतप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

45 वर्ष पूर्व में प्रतिष्ठित इस मंदिर को शिखरबद्ध का भव्य स्वरूप प्रदान किया जा रहा है।

भूमिपूजन का लाभ-श्रीमती चंचलबाई किशनचंदजी कटारिया परिवार द्वारा लिया गया एवं खातमुहूर्त्त का लाभ-श्री सुखलालजी मिश्रीलालजी बैद परिवार ने प्राप्त किया।

विधिकारक चिराग भाई द्वारा विधि विधान कराये गये एवं मुनिश्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. द्वारा जिनमंदिर निर्माण पर्यन्त प्रतिमाह के चतुर्थ रविवार को सामूहिक नवकार महामंत्र, महावीर स्वामी जाप एवं दादा गुरुदेव इकतीसा एवं शुद्ध आयंबिल करने की प्रेरणा को श्रीसंघ ने सहर्ष स्वीकार किया।

श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चिंतादरीपेठ ने पधारे हुए सभी महानुभावों का अभिवादन किया।

वार्षिक ध्वजा सम्पन्न

चैन्नई वडपलनी स्थिति श्री संभवनाथ जैन श्वे. मंदिर का 18 वां वार्षिक ध्वजारोहण ता. 30 नवम्बर 2023 को अतीव हर्षोल्लास के साथ पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में सानंद संपन्न हुआ। ओम् पुण्याहं पुण्याहं के दिव्य मंत्रोच्चारणों के साथ कायमी लाभार्थी श्री वीरेन्द्रमलजी, आशीष कुमारजी मेहता परिवार ने ध्वजा चढ़ाई। यह ज्ञातव्य है कि इस मंदिर की प्रतिष्ठा 18 वर्ष पूर्व पूज्यश्री की ही निश्रा में सम्पन्न हुई थी।

श्रीमती पानीदेवी छाजेड़ का जीवित महोत्सव संपन्न

पू. गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 9 व गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म., साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 13 के पावन सानिध्य में पादरू चैन्नई निवासी श्रीमती पानीदेवी मुलतानमलजी छाजेड़ के जीवित महोत्सव तथा सौ. सरोजादेवी किशोरकुमारजी छाजेड़ के वर्षीतप आराधना निमित्ते त्रिदिवसीय भक्ति उत्सव का भव्य आयोजन किया गया। ता. 18 नवम्बर को पूज्यश्री का मंगल प्रवेश हुआ। घर में पगले करवाये गये। पूज्यश्री के मंगल प्रवचन के बाद जयतिहुअण महापूजन का आयोजन किया गया।

ता. 19 नवम्बर को पूज्यश्री का व पू. साध्वी श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी म. का मंगल प्रवचन हुआ। साथ ही वर्षीतप तपस्वी का वधामणा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

ता. 20 नवम्बर को पद्मावती आलोयणा की विवेचना हुई तथा मातृ पितृ वंदना का संगीतमय कार्यक्रम हुआ। इस वंदना का संचालन बेंगलोर से पधारे डी.वी.पी. ग्रुप ने किया।

छाजेड़ परिवार की ओर से सप्तक्षेत्र व जीवदया में बड़ी राशि का लाभ लिया।

सुश्री तन्वी सिंघवी की भागवती दीक्षा बल्लारी में

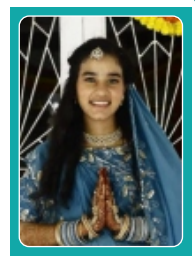

गढसिवाना निवासी सुश्री तन्वी सिंघवी की भागवती दीक्षा बल्लारी नगर में ता. 8 मार्च 2024 को पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न होगी।

चेन्नई नगर में ता. 7 दिसम्बर 23 को प्रतिष्ठा संबंधी दीक्षा कल्याणक के वरघोडे के दिन परिवार द्वारा विनंती करने पर पूज्यश्री ने 8 मार्च का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। कुमारी तन्वी सिंघवी श्री प्रकाशकुमारजी सिंघवी की सुपुत्री है और लगभग 3-4 वर्षों से पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. के पास संयम की शिक्षा प्राप्त कर रही है। बल्लारी नगर में पूजनीया गणिनी प्रवरा की प्रेरणा से निर्मित जिनमंदिर दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर यह भागवती दीक्षा संपन्न होगी।

(शेष पृष्ठ 12 का)

पूज्यश्री का चेन्नई...

आपके बहुमुखी व्यक्तित्व का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पहलू यह है कि आपने खरतरगच्छ को पुन: विकास के पथ पर स्थापित किया है जिससे पूरा जिनशासन लाभान्वित हो रहा है।

आपने हमेशा उच्चतम व्यवहार और आदर्शों की प्रवृति के लिये प्रेरित किया है। आपने धर्म के मूल्यों, सिद्धान्तों और नैतिकता के प्रति समर्पण के लिये प्रेरित किया है।

आपश्री ने संयम यात्रा के 50 वर्ष पूर्ण कर लिये हैं और हम परमात्मा से यही प्रार्थना करेंगे कि आपका नेतृत्व और मार्गदर्शन चिरकाल तक सकल संघ को प्राप्त होता रहें एवं चारों दिशाओं में गुरुदेव का जयघोष हो।

हमारा ट्रस्ट एवं सभी चैन्नईवासी आपकी अद्वितीय प्रेरणा, मार्गदर्शन, जिनवाणी के श्रवण, प्रेम व ममत्व के लिये आपके दिल से आभारी है। हम आपके अनंत आशीर्वाद के लिये कृतज्ञ हैं और आपके मार्गदर्शन में प्रगति करते रहेंगे यही हमारी मंगलभावना है।

गुंटूर में चातुर्मास सम्पन्न

श्री जैन भवन अरण्डलपेट गुंटूर नगर में प पू खरतर-गच्छाधिपति आचार्य श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी चम्पा जितेन्द्र ज्योति प. पू. धवल यशस्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा आदि ठाणा 6 का चातुर्मास हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न हुआ। चातुर्मास के दौरान धर्म आराधना की धूम मची।

चातुर्मास में शान्तिधारा तप, पर्युषण पर्व पर छठ अठम, अठाई तप, और प्रत्येक रविवार को विशेष कार्यक्रमों में अष्टप्रकारी पूजा, अष्टापद भाव यात्रा, 16 सती, अष्ट प्रवचन माता, VPL, नेम राजुल कपल शिविर, बच्चों के लिए खुल जा सिम सिम, 24 तीर्थंकरों के नाम, और श्रमणी भगवंत स्वीकारों हमारा वंदन जैसे सुंदर कार्यक्रम हुए एवं प्रतिदिन सुबह 6.30 से 7.00 बजे श्रावकों के लिए क्लास, प्रति रविवार दोपहर को बच्चों और श्राविकाओं के लिए शिविर हुए जिसमें सबने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

तारीख 21-11-2023 को गुरुवर्या का विदाई समारोह रखा जिसमें श्रावक श्राविकाओं ने अपने-अपने अनुभव बताये और भावुक पलकों से सबने गुरुवर्या के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। चातुर्मास की सबसे बड़ी उपलब्धि करीब 130 श्रावकों को जोड़कर स्वाध्याय सामायिक मण्डल की स्थापना हुई।

दिनांक 27-11-2023, सोमवार को चातुर्मास परिवर्तन हेतु विद्यानगर दादावाड़ी पधारें।

गुंटूर में सामायिक मण्डल की स्थापना

धर्मनगरी गुंटूर में खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीजी श्री विमलप्रभाश्रीजी आदि ठाणा की शुभ निश्रा में गुंटूर नगर के इतिहास में पहली बार भाईयो का सामायिक मंडल बना है प्रति रविवार को दोपहर 2.30 बजे से 3.30 बजे तक और करीबन 130 श्रावक इस मंडल में जुड़े है। बहनों के सामायिक मंडल तो होते है लेकिन भाईयों का सामायिक मंडल बनना एक सराहनीय कार्य है।

अमरसागर में धर्मशाला का निर्माण

जैसलमेर के पास स्थित अमरसागर तीर्थ के भव्य वातावरण में भव्य धर्मशाला का निर्माण होने जा रहा है। 30 कमरों वाली यह धर्मशाला अत्यन्त आधुनिक सुविधाओं से संपन्न होगी। श्री जैन ट्रस्ट जैसलमेर के अन्तर्गत बनने वाली इस धर्मशाला के साथ भोजनशाला का भी अलग से निर्माण होगा। इस भोजनशाला का लाभ सांचोर निवासी श्रीमती शांतिदेवी जवाहरलालजी चंदन परिवार ने लिया है। विविध लाभार्थियों ने कमरों का लाभ भी प्राप्त किया है।

यह ज्ञातव्य है कि अमरसागर मंदिर का निर्माण बाफना परिवार द्वारा 19वीं शताब्दी में बनाया गया था। जिसके जीर्णोद्धार के पश्चात् पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री ने इसकी भव्य प्रतिष्ठा संपन्न करवाई थी। यह प्रतिष्ठा 17 फरवरी 1997 को संपन्न हुई थी।

महापूजन का आयोजन

कुशल भवन में श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ के तत्त्वावधान में पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा., बहिन म. साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की पावन निश्रा में नये वर्ष की पावन वेला में गौतमस्वामी गणधर भगवंत के महापूजन का भव्य आयोजन किया गया।

इस महापूजन का आयोजन नव दीक्षित साध्वी श्री योगरुचिश्रीजी म., साध्वी श्री तन्मयरुचिश्रीजी म. एवं साध्वी श्री आराध्यरुचिश्रीजी म. के वर्धमान तप की ओली का पाया डालने के उपलक्ष्य में किया गया।

गौतमस्वामी महापूजन की मुख्य पीठिका का लाभ संघवी श्री जावंतराजजी टीपुदेवी मरडिया हस्ते श्री महेन्द्र कुमार मरडिया परिवार ने प्राप्त किया। विधिकारक श्री प्रकाशभाई ने सुन्दर माहोल बनाते हुए महापूजन करवाया। एवं संगीतकार श्री गौरव मालू संगीत की अलख जगाकर महापूजन को भव्यता दी। बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

आयोजक था खरतरगच्छ संघ सांचोर।

चातुर्मास परिवर्तन

प.पू. माताजी म. श्री रतनमाला श्रीजी म.सा. एवं बहिन म. साध्वी श्री डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के चातुर्मास परिवर्तन का लाभ साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म.सा. के सांसारिक बहिन रेशमी बहिन रमेश कुमारजी मेहता परिवार ने प्राप्त किया।

सकल संघ के साथ गुरुवर्याश्री कार्तिक पूर्णिमा की क्रिया संपन्न कर कुशल भवन से प्रस्थान करके महावीर स्वामी मंदिर, वासुपूज्य मंदिर के दर्शन करके श्री कालुचंदजी इन्दिरा देवी (साध्वीश्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी के सांसारिक परिवार) के गृहांगन में पधारे। परिवार ने गुरुवर्या श्री को अक्षतों से बधाया ।

वहां से गुरुवर्या श्री पुलिस थाना होते हुए रेशमी बेन रमेश कुमारजी मेहता परिवार के वहां पधारे।

मेहता परिवार ने गुरु भगवंत का हर्षोल्लास से सामैया किया।

गुरुवर्याश्री ने मेहता परिवार के निवेदन पर संक्षिप्त में सिद्धाचल तीर्थ की महिमा बताते हुए द्राविड वारिखिल्ल आदि 10 करोड़ मुनियों के निर्वाण की घटना पर प्रकाश डाला।

प्रवचन के पश्चात् दिनेश भाई अध्यापक ने गुरुवर्याश्री के बारे में अपने भाव प्रकट किये। गुरुभगवंतों के आगमन पर रेश्मी बेन ने गुरु महिमा पर गीत प्रस्तुत किया। श्री जेठमलजी बोथरा ने संघ की तरफ से चातुर्मास में हुई त्रुटियों के लिए गुरुवर्या श्री एवं संघ से क्षमायाचना की । बाबुलालजी एवं रमेशजी मेहता आदि परिजनों द्वारा गुरु भगवंतों को कामली ओढायी गयी। कार्यक्रम पश्चात् लाभार्थी परिवार द्वारा अल्पाहार करवाया गया।

सांचौर नगरे में हुई ज्ञानवाटिका की स्थापना

प प खरतरगच्छाधिपति आचार्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभ-सूरीश्वरजी म सा की आज्ञानुवर्तिनी प पू माताजी म श्री रतनमालाश्रीजी म सा एवं प पू बहिन म डॉ श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म सा आदि ठाणा सांचौर नगरे भव्य चातुर्मास की पूर्णाहुति कर सांचौर दादावाड़ी पधारें। दादावाड़ी में पूज्य गुरुवर्याश्री जी की प्रेरणा से श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ सांचौर के तत्वावधान में ज्ञान वाटिका की स्थापना की गई। ज्ञान वाटिका का लाभ श्रीमती रेशमी बेन रमेशकुमार जी मेहता ने लिया। इस अवसर पर कई महानुभाव उपस्थित थे।

मुमुक्षुओं का स्वागत अभिनन्दन

प. पू. गच्छाधिपति गुरुदेव श्री मणिप्रभसूरिश्वरजी म. सा. की. पावन निश्रा में वै. कु. भावना, कु. आरती, कु. निशा, कु. साक्षी एवं कु. राखी उपधान संपन्न करके जब सांचोर पहुंची तो खरतरगच्छ श्री संघ सांचोर द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

प. पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी एवं बहिन म. साध्वी श्री डॉ विद्युत्प्रभाश्रीजी म० सा. की मंगलनिश्रा में सभी मुमुक्षु महावीर स्वामी मंदिर से ढोल वाजिंत्र एवं संघ के साथ कुशल भवन पहुंचे, जहाँ उपस्थित सभी मुमुक्षुओं के परिजनों द्वारा पाद प्रक्षालन किया गया। रंगोली से सजे कुशल भवन में जब पाँचों मुमुक्षुओं ने प्रवेश किया तो जयकारो से माहोल गूंज उठा। नाचते-झूमते पांचो मुमुक्षुओं का आनंद जैसे शिखर चूम रहा था।

सांचौर चातुर्मास प्रभारी श्री केवलचंदजी बोहरा ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुमुक्षुओं के तप की अनुमोदना की। साध्वी योगरुचिश्रीजी म., तन्मयरुचिश्रीजी म., आराध्यरूचिश्रीजी म. एवं प्रकाशजीमालू ने तप अभिनंदन की गीतिका प्रस्तुत की। पांचो मुमुक्षुओं ने भी गुरु भगवंत के प्रति समर्पण, व्यक्त करते हुए गीतिका प्रस्तुत की। मुमुसुओं ने गुरु वर्धापना का नृत्य के साथ कार्यक्रम प्रस्तुत किया। खरतरगच्छ संघ सांचोर ने पाँचो मुमुक्षुओं का बहुमान किया। श्री संघ की ओर से, नवकारसी के लाभार्थी कमलेशकुमार मनीषकुमार बेटा पोता अशोककुमारजी पीरचंदजी सिंघवी का बहुमान किया गया।

अंत में गुरुवर्याश्री ने उपधान तप आराधना की महिमा बताते हुए मुमुक्षुओं के भावो की अनुमोदना के साथ तप की निर्विघ्न पूर्णाहूति पर बधाई दी। समापन करते हुए श्री जेठमलजी बोथरा ने अतिथियों का, मुमुक्षुओं का एवं कार्यक्रम में उपस्थित सभी को धन्यवाद दिया।

निम्बाहेड़ा में पंचान्हिका महोत्सव सम्पन्न

निम्बाहेड़ा नगर की 'धन्य धरा पर श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी में प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी मालवा मेवाड़ ज्योति मेवाड़सिंहनी पूज्या साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म.सा. की परम पावन निश्रा में चातुर्मास में जिनशासन की ज्योति दैदीप्यमान करते हुए कई महापूजन, जप तप आदि की आराधना की श्रृंखला में दिनांक 18-11-23 से 22-11-23 तक पंचाह्निका महोत्सव विविध पूजाओं अनुष्ठानों द्वारा सम्पन्न किया गया।

प्रथम दिवस दिनांक 18-11-23 को ज्ञान पंचमी की आराधना एवं आर्य पुत्र आचार्य श्री जिनउदयसागरसूरिजी म. सा. की पुण्यतिथि के अवसर पर 10 से 25 वर्ष के बालक एवं युवक युवतियों ने सामूहिक एकासना, प्रवचन एवं साधना की। इसी क्रम में पूज्य गच्छाधिपतिश्री के, पूज्या माताजी म.सा. एवं बहिन म.सा. के 50 वें वर्ष के दीर्घ संयम पर्याय पूर्णाहुति की श्रृंखला में गुणानुवाद सभा।

द्वितीय दिवस दि. 19-11-23, रविवार, को माँ सरस्वती का महापूजन विधिकारक श्री पंकज जैन द्वारा सम्पन्न हुआ इसका लाभ श्री रामलाल, राहुलकुमार बैरवा परिवार ने लिया तत्पश्चात् गुरु प्रसादी का आयोजन रखा गया।

तृतीय दिवस 20-11-23, सोमवार, को प.पू. आगम ज्योति दादी गुरुवर्या प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की 125 वीं जन्म जयंति उपलक्ष्य में गुणानुवाद सभा एवं दोपहर में दादा गुरुदेव महापूजन श्री सुरेन्द्रकुमार, दीपककुमार, अखिलेश कुमार एवं अक्ष कुमार चौधरी परिवार द्वारा पढ़ाई गई।

चतुर्थ दिवस 21-11-23 मंगलवार को कुशल वाटिका तीर्थ प्रेरिका पूज्या गुरुवर्या बहिन म.सा. डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी के 50वीं वर्धमान तप ओली, निमित्त गुणानुवाद सभा एवं सायं में महिलाओं द्वारा चौबीसी का आयोजन इसका लाभ श्री खरतरगच्छ संघ ने लिया।

पंचम दिवस 22-11-23, बुधवार, को मेवाड़-मालवा ज्योति, स्पष्ट वक्ता मेवाड़सिंहनी परम पूज्या गुणरंजनाश्रीजी म.सा. के 58 वां जन्म दिवस के उपलक्ष्य में जन्मोत्सव समारोह एवं पूज्या श्री जीवनी पर श्रावक-श्राविकाओं द्वारा एक लघु नाटिका खरतरगच्छ संघ निम्बाहेड़ा द्वारा एवं नीमच महिला मंडल द्वारा सुन्दर सी कव्वाली का सफलतापूर्वक आयोजित की गई।

इसी क्रम में दोपहर 2 बजे दादा गुरुदेव महापूजन का आयोजन रखा गया। इसका लाभ पूज्या साध्वी श्रीजी की परिचायिका श्रीमती उमा बेन धनगर ने लिया। इससे पूर्व संघ के अध्यक्ष श्री कमल कुमार डागा एवं मंत्री श्री अखिलेश कुमार चौधरी ने अतिथियों का वाणी द्वारा स्वागत किया। अन्त में गुरुवर्या श्री ने अपने मुखारविंद से आशीर्वचन प्रदान किये। इन सभी उक्त कार्यक्रमों का संचालन संघ के संरक्षक श्री सुरेन्द्र कुमार चौधरी ने करते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

वर्षीतप पारणा का भव्य आयोजन

श्री जैन श्वेतांबर नया मंदिर ट्रस्ट,महावीर बाग इंदौर के तत्त्वावधान में वर्ष २०२४-२५ में सामूहिक वर्षीतप पारणा कराने का निर्णय लिया गया । वर्षीतप के तपस्वियों के वर्ष भर के पारने की व्यवस्था ट्रस्ट के अंतर्गत महावीर बाग परिसर में की जायेगी। सामूहिक वर्षीतप पारणा के मुख्य व्यवस्थापक श्री मोहनसिंहजी लालन एवं जयंतीजी सिंघवी, ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नरेंद्रसिंहजी बाफना, उपाध्यक्ष श्री छगनराजजी हुंडिया, श्री बसंतजी लुनिया, श्री नरेशजी मेहता, श्री अशोकजी कोठारी, श्री सुरेंद्रजी गांधी ने सभी से सामूहिक वर्षीतप पारणा के आयोजन को सफल बनाने का अनुरोध किया।

रमेश मित्रा भवानीपुर (कलकत्ता) में महिला परिषद शाखा नं. 2 का गठन

परम श्रद्धेय, परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की प्रेरणा,मंगल आशीर्वाद से तथा सज्जनमणि प्रवर्तिनी प पू श्री शशिप्रभाश्रीजी म सा की सुशिष्या प पू श्री सम्यग्दर्शनाश्री जी म सा के मार्गदर्शन मे रमेश मित्रा, भवानीपुर (कलकत्ता) में महिला परिषद् शाखा नं 2 का विधिवत गठन हुआ। जिसके अध्यक्ष-श्रीमती ममताजी बादलिया, सचिव-श्रीमती प्रतिभाजी दुधोरिया, को मनोनीत किया गया।

रायपुर में पुण्यतिथि मनाई

प. पूज्य आचार्य भगवन्त श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वर जी म. सा. की 38 वीं पुण्यतिथि निमित्त देवेंद्र नगर रायपुर के तत्वावधान में गणिनी प्रवरा प.पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा.की सुशिष्या प.पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.सा. प.पू. डॉ.प्रियलताश्रीजी म.सा. प.पू . डॉ. प्रियवंदनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा 6 की निश्रा में दिनांक 4/12/23 सोमवार को नवकार जाप, गुणानुवाद एवं भक्ति का आयोजन रखा गया।

P.H.D. की उपाधि से सम्मानित

त्रिभुवन पार्श्वनाथ 72 जिनालय तीर्थ मेडचल (हैदराबाद) में परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती श्री कल्पलता श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री मननप्रियाश्रीजी म. सा. को कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य विरचित ''वीतराग स्तोत्र'' का दार्शनिक अध्ययन करने पर जैन विश्व भारती संस्थान लाडनू के द्वारा जैन विद्या एवम् तुलनात्मक कर्म तथा दर्शन विभाग में (यू.जी.सी. रेग्यूलेशन 2009 के अंतर्गत) डॉ.श्रीमान श्रेयांश कुमारजी सिंघवी जयपुर एवम् डॉ.श्री ज्ञानचंद जी जैन चेन्नई के द्वारा मननप्रियाश्रीजी म. को P.H.D. की उपाधि से सम्मानित किया गया।

ऋषभ धुन लागी चौविहार छठ सात यात्रा ने रचा इतिहास

श्री सिद्धाचल गिरिराज की छत्रछाया में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद (ज्ञयुप), अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद (ज्ञडच) के तत्त्वावधान में पूज्य गुरुदेव अर्वांति तीर्थोद्धारक, युग दिवाकर खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के संयम जीवन के 51 वें वर्ष एवं पूज्या माताजी म. साध्वी श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. के 83 वें अवतरण वर्ष के उपलक्ष्य में ''ऋषभ धुन लागी'' चौविहार छठ करके सात यात्रा का कल्पनातीत आयोजन हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री के शिष्य मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म.सा., मुनि श्री मननप्रभसागरजी म.सा., मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजीम.सा., मुनि श्री महितप्रभसागरजी म.सा.आदि ठाणा 5 की पावनकारी निश्रा एवं महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि विशाल श्रमणीवृन्दों की पावनकारी सानिध्यता प्राप्त हुई।

दिनांक 16 नवम्बर, 2023 को उत्तर पारणे के साथ कार्यक्रम का भव्य शुभारम्भ हुआ एवं रात्रि में मनन सिंघवी एवं वक्ता विराज भाई ने अद्भुत गिरिराज की भक्ति की अलख लगाई।

दिनांक 17 नवम्बर को मोकलसर निवासी दिनेशजी हुण्डिया परिवार द्वारा आराधकों का विजय तिलक के साथ यात्रा हेतु साँचा सुमतिनाथ मंदिर से तलेटी गाजे-बाजे के साथ प्रस्थान हुआ।

तलेटी में सामूहिक चैत्यवंदन के पश्चात् हर्ष व उमंग के साथ यात्रा प्रारम्भ हुई।

चतुर्विध संघ के साथ आदिनाथ के जयकारे लगाते हुए सभी एक दूसरे का हौसला बढ़ाते हुए सीढ़ियां चढ़ने लगे और यात्रा की भव्य शुरुआत की गई।

गर्मी का तीव्र वातावरण होने पर भी बड़ी संख्या में आराधकों ने इस यात्रा में भाग लिया।

आराधकों को शाता पहुंचाने के लिये जो सेवाएँ प्रदान करने वाले सेवार्थीयो की सेवा-भावना अनुमोदनीय रही। जिसमें बाड़मेर, अक्कलकुआवाँ व खापर आदि ज्ञानवाटिका के विद्यार्थियों ने भी सेवार्थी बनकर सेवाएँ दी।

चिकित्सा सेवा के लिये तलोदा निवासी श्रीमती काजलजी-श्री पंकजजी जैन एवं सेलंण निवासी श्री सुरेशजी चोरडिया ने अपनी पूरी टीम के साथ सेवाएँ दी।

दिनांक 18-19 नवम्बर, 2023 को शेष बची यात्राएँ सम्पन्न की गई एवं शाही पारणे सम्पन्न हुए।

आराधकों व सेवार्थियों का ज्ञयुप-ज्ञडच के द्वारा बहुमान किया गया। देवांश डोसी, मोहित बारोट व शैल शाह द्वारा सुमधुर भक्ति करवाई गई।

इस आयोजन में मात्र श्रावक-श्राविकाओं ने ही भाग नहीं लिया बल्कि श्रमण-श्रमणी भगवन्तों ने भी इसमें जुड़कर इस महोत्सव की शान बढ़ाई है।

मुनि श्री महितप्रभसागरजी म.सा. ने वर्षीतप की तपस्या में चौविहार छट्ठ पूर्वक सात यात्रा करते-करते अनेक आराधकों को प्रेरणा की। तपोरत्ना साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. ने चौविहार छट्ठ पूर्वक 11 यात्रा की। साध्वी श्री रम्यगुणाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री रत्ननिधिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री प्रेरणानिधिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सम्यग्निधिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री जिनकीर्तिश्रीजी म.सा. एवं वर्षीतप तपस्वी साध्वी श्री नम्रप्रभाश्रीजी म.सा. के साथ-साथ तपागच्छीय साधु व साध्वीजी भगवन्तों ने भी इसमें शामिल होकर जैनं जयति शासनम् का जयघोष गुंजाया।

मुनि श्री श्रमणदर्शनविजयजी म.सा., मुनि श्री संयमदर्शनविजयजी म.सा., मुनि श्री मार्गदर्शनविजयजी म.सा.

साध्वी श्री हितप्रियाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुजसप्रियाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री हार्दप्रियाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री परमश्रेयाश्रीजी म.सा, साध्वी श्री श्रेयोरुचिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सर्वज्ञरुचिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुश्रेयोरुचिश्रीजी म.सा.।

खरतरगच्छ के इतिहास का यह विशाल आयोजन प्रथम बार संपन्न हुआ है जो कि स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जायेगा।

इस यात्रा का कुशल मार्गदर्शन मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा., वर्षीतप के तपस्वी मुनिद्वय मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. एवं मुनि श्री महितप्रभसागरजी म.सा. ने दिया, तो इस यात्रा की सफलता के लिये कठिन परिश्रम करने वाले संयोजक श्री प्रदीपकुमारजी श्रीश्रीश्रीमाल सांचौर, मुम्बई का श्रम भी अनुकरणीय रहा। साथ ही Kयुप-KMP के समस्त कार्यकर्ताओं की उपस्थिति, भक्ति व सेवा ने इस आयोजन को सफल बनाया। इस सफलता को देखकर हर वर्ष यह आयोजन होता रहें ऐसी सभी की भावनाएँ प्रगट हुई।

श्री मणिप्रभ स्वास्थ्य योजना शृंखला का पांचवा शिविर सम्पन्न

श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के तत्वावधान में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् व महिला परिषद् (बसवनगुडी, बैंगलोर शाखा) द्वारा संयुक्त रूप से Sagar Chandramma Hospitals, Bangalore के सहयोग से माताओं एवं बहनों के लिये विशेषकर आयोजित श्री मणिप्रभ स्वास्थ्य योजना श्रृंखला के पंचम नि:शुल्क स्त्री रोग जागरूकता, जाँच एवं परामर्श शिविर का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

स्वास्थ्य योजना संयोजक पंकज बाफना एवं गौतम कोठारी ने कहा कि ''महिला'' परिवार की रीढ़ होती है, रोजमर्रा की जिम्मेदारियों के चलते महिलाएं अपने सामने आने वाली बीमारियों को नजरअंदाज कर देती हैं। इस से जो बीमारियाँ कम समय में ठीक हो सकती थीं, वे अक्सर बड़ी बीमारियों में बदल जाती हैं।

सागर चंद्रम्मा हॉस्पिटल्स की डॉ. वीना यारागट्टी ने कहा कि मासिक धर्म संबंधी विकार एक महिला के जीवन की गुणवत्ता पर बड़ा प्रभाव डाल सकते हैं। वे शारीरिक दर्द, भावनात्मक परेशानी एवं रोजमर्रा की गतिविधियों में हस्तक्षेप कर सकते हैं।

महिला परिषद केएमपी की अध्यक्ष रीता पारख एवं सचिव आरती जैन ने मासिक धर्म के संबंध में किशोर लड़कियों के बीच जागरूकता की आवश्यकता पर जोर दिया क्योंकि अधिकांश पिता इसके बारे में नहीं जानते हैं और माताएं भी अपनी बेटियों से इसके बारे में बात नहीं करती हैं। महिला परिषद की रेखा चोपड़ा व पूनम कोठारी ने कहा कि मासिक धर्म स्वच्छता के बारे में चुप्पी समाज में गहराई से व्याप्त है।

इस शिविर में सागर चंद्रमा हॉस्पिटल्स के विशेषज्ञ डॉक्टर पैनल से स्त्री रोग विशेषज्ञ - डॉ. रीतू जी नरेश, डॉ. सुधा सी. पी., डॉ. पावना प्रकाश, डॉ. संध्या और स्तन विशेषज्ञ डॉ. ह्यमावती राजे शामिल रहे।

युवा परिषद् केयुप के अध्यक्ष भरत रांका ने बताया कि मासिक धर्म स्वास्थ्य शिविर जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की सभी किशोर लड़कियों और महिलाओं के लिए खुला था। सभी प्रतिभागियों को अग्रणी पर्सनल हाइजीन केयर ब्रांड-बेल्ला (BELLA) की ओर से गिफ्ट हैम्पर्स प्रदान किए गए। अस्पताल प्रबंधन द्वारा नि:शुल्क परामर्श एवं परामर्श के अलावा प्रयोगशाला परीक्षण सेवाओं पर छूट भी दी गई।

श्री मणिप्रभ स्वास्थ्य योजना के इस पंचम शिविर के प्रायोजक समाज कल्याण कार्यों में सदैव अग्रणी रहने वाले मरुधर में मोकलसर प्रवासी, हाल बैंगलोर निवासी संघवी श्रीमती ललितादेवी पुखराजजी पालरेचा (P.H.SHAH) परिवार (M/s Shah Group) बैंगलोर रहे। शिविर में सेवा देने वाले अजय पारेख, अरविंद चोपड़ा आदि और प्रायोजक परिवार का मंत्री कल्पेश लुंकड़ ने आभार जताया। श्री मणिप्रभ स्वास्थ्य योजना श्रृंखला का अगला छठा शिविर जनवरी महीने में होगा और उसकी जानकारी जल्दी प्रेषित की जाएगी।

बाड़मेर कुशल वाटिका में त्रिदिवसीय आयोजन

कुशल वाटिका बाडमेर नगर में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में पौष दशमी के पावन अवसर पर अट्ठम तप की आराधना के साथ त्रिदिवसीय भक्ति महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया है।

परमात्मा पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म व दीक्षा कल्याणक तथा पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की पावन पुण्य स्मृति में उनकी 40वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में ता. 5 से 7 जनवरी 2024 तक महापूजन आदि का आयोजन किया गया है। ता. 5 जनवरी को दादा गुरुदेव का महापूजन होगा। ता. 6 जनवरी को वर्धमान शक्रस्तव अभिषेक तथा ता. 7 जनवरी को उवसग्गहरं महापूजन का आयोजन होगा। प्रतिदिन रात्रि में भक्ति भावना का आयोजन होगा। विधिविधान कराने सांचोर से प्रकाशभाई आयेंगे तथा गौरव मालू एण्ड पार्टी द्वारा संगीतमय भक्ति विधान होगा।

श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम ट्रस्ट कुशल वाटिका बाडमेर के तत्वावधान में होने वाले इस संपूर्ण कार्यक्रम का लाभ श्री आसुलालजी अंतरीदेवी धारीवाल की स्मृति में श्री पारसमलजी-मोहनीदेवी, बाबुलालजी सुशीलादेवी, नरेशकुमारजी भावनादेवी, संजयकुमार मीनादेवी, दिनेशकुमार अरविन्दकुमार सुनीलकुमार करण अर्जुन दिव्यांशु लब्धि धारीवाल परिवार रामजी की गोल बाडमेर वालों ने लिया है।

खडगपुर में संयम स्वर्णोत्सव का भव्य आयोजन

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. के पावन सानिध्य में उनकी निश्रावर्तिनी पूजनीया साध्वी श्री दिव्यदर्शनाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री तत्वदर्शनाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. के संयम के 50 वर्ष पूर्ण होने पर संयम स्वर्णोत्सव के नाम से दो दिवसीय भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

कोचर परिवार के श्री भीखमचंदजी सा. की सुपुत्री तीनों ही बहिनों का दीक्षा समारोह आज से 50 वर्ष पहले वि. सं. 2030 माघ सुदि 5 को हुआ था।

श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, खडगपुर के तत्वावधान में होने वाला यह कार्यक्रम ता. 31 दिसम्बर 2023 व ता. 1 जनवरी 2024 को संपन्न होगा।

प्रथम दिन सामायिक चारित्र दिवस व दूसरा दिन महाव्रत दिवस के रूप में मनाया जायेगा। प्रथम दिन वर्धमान शक्रस्तव अभिषेक होगा। पूजनीया म.सा. का प्रवचन होगा। मातृ पितृ वंदनावली होगी। सांझी, भक्ति के साथ विशेष रूप से सुप्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर संतोष बडेर की विशेष स्पीच रहेगी।

दूसरे दिन दादा गुरुदेव के अभिषेक के बाद वरघोडा निकाला जायेगा। बाद में गुरु वधामना, बहुमान आदि का कार्यक्रम होगा। शाम को संवेदना का कार्यक्रम रखा गया है, जिसे पूजनीया साध्वी श्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म.सा. संचालित करेंगे। भक्ति के रस में सभी को भिगोने के लिये अजीमगंज निवासी खुश्बू परीक्षितजी पटावरी पधारेंगे।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री का विहार कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक युगदिवाकर खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 5 ता. 18 दिसम्बर 2023 को मुणोत भवन, चेन्नई से विहार कर संघ सहित श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनमंदिर दादावाडी के दर्शन कर डॉ. विनम्रजी धारीवाल के घर पधारे। वहाँ दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई। वहाँ से पूज्यश्री टिण्डीवनम्, तिरुवन्नामल्लै होते हुए सेलम पधारेंगे, जहाँ पूज्यश्री की निश्रा में कवाड परिवार द्वारा निर्मित श्री सीमंधर स्वामी जिनमंदिर दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा व दो बालिकाओं सुश्री पूजा पारख व सुश्री दिव्या आबड़ की भागवती दीक्षा ता. 21 जनवरी 2024 पौष सुदि 11 रविवार को संपन्न होगी। साथ ही तिरपातूर में दीक्षित कवाड परिवार की कुलदीपिका पू. साध्वी श्री प्रियमितांजनाश्रीजी म. की बडी दीक्षा संपन्न होगी।

वहाँ से पूज्यश्री ता. 22 जनवरी को बैंगलोर की ओर विहार करेंगे, जहाँ पूज्यश्री की निश्रा में मागडी रोड श्री सुमतिनाथ जिन मंदिर में नूतन जिन बिम्बों व दादा गुरुदेव की अंजनशलाका प्रतिष्ठा ता. 11 फरवरी 2024 रविवार माघ सुदि 2 को संपन्न होगी। साथ ही तिरूच्चिरापल्ली निवासी श्रीमती शोभाजी कोटडिया की भागवती दीक्षा संपन्न होगी। वहाँ से पूज्यश्री बल्लारी की ओर विहार करेंगे।

संपर्क : मुकेश- 98251 05823 / 79871 51421

नवनिर्मित तीर्थों व दादाबाड़ी के दर्शनार्थ पधारिये

श्री विक्रमपुर (राज.)

द्वितीय दादा गुरूदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी की जन्मस्थली विक्रमपुर (हाल में बीकमपुर) में नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय तथा मणिधारी दादाबाड़ी के दर्शन पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के अलग उपाश्रय तथा अतिथिगृह जिसमें एअरकंडीशनर व फर्नीचरयुक्त कमरे, डोरमेट्री की सुविधा प्राप्त है तथा यह फलोदी से 75 किमी. तथा बीकानेर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह जैसलमेर, फलोदी, बीकानेर हाइवे पर बाप से 45 किमी. पर स्थित है।

Administrotor
Shri Dharmendra Khajanchi
Bikaner (Raj.) Mo.: 9413211739

मुनीम श्री प्रशान्त शर्मा, श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी,
बीकमपुर (विक्रमपुर)- 334305 (जि. बीकानेर-राज.)
मो. 9571353635, 9001426345-पेढ़ी

श्री खेतासर (राज.)

चतुर्थ दादागुरूदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचंद्रसूरिजी की जन्म स्थली खेतासर में नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय तथा चतुर्थ गुरूदेव की दादाबाड़ी के दर्शन-वंदन व पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के उपाश्रय तथा अतिथिगृह फर्निचरयुक्त कमरे की सुविधा प्राप्त है। यहाँ भोजनशाला की सुविधा है मगर हर रोज भोजनशाला चालू नहीं है। यहाँ पधारने के लिये जोधपुर, ओसिया, तिंवरी से बस सर्विस चालू है। यह स्थान ओसियां तीर्थ से 10 किमी. तथा जोधपुर से 65 किमी. पर हैं।

Administrotor श्री बाबूलालजी टाटिया
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 9928217531

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 74250062227

श्री सिद्धपुर पाटन (गुज.)

खरतरगच्छ की जन्मस्थली पाटन नगर में सहस्राब्दी वर्ष के उपलक्ष में भवन का निर्माण किया गया है। यहां पर साधु-साध्वी भगवतों के रूकने, स्वाध्याय व पठन-पाठन के लिए सुविधायुक्त भवन है। कृपया जब भी साधु-साध्वी भगवंत पाटन पधारे तो इस सुविधा का उपयोग जरूर करें।

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी, पाटन (गुज.)

Ex. Trustee: **Shri Deepchandji Bafna**
Ahmedabad (Guj.) Mo. 9825006235

श्री राकेश भाई मो. 9824724027

तिरुपातुर में ललवाणी परिवार द्वारा अभिनंदन

तिरुपातुर 18 नवंबर। चेन्नई में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब की निश्रा में 'आत्म-स्पंदन' उपधान तप संपन्न हुआ। जिसमें अनेक तपस्वियों ने आराधना की। उन्हीं तपस्वियों में तिरुपातुर निवासी सौ. स्नेहलता ललवानी ने उपधान तप की आराधना मौनपूर्वक संपन्न की। उपधान तप की शातापूर्वक पूर्णता व मालारोपण के पश्चात तिरुपातुर नगर में प्रवेश करवाया गया। तपस्वी के साथ मुमुक्षु पूजा पारख, तिरुचिरापल्ली निवासी मुमुक्षु श्रीमती शोभा जी कोटडिया सहित उपधान तप के 26 आराधक एवं 15 मुमुक्षुओं का पदार्पण हुआ।

इस उपलक्ष में दिनांक 18 नवंबर शाम को 'अनुमोदन-पल' में मनन भाई शाह, मनन संघवी, विरल सुराणा, विराज शाह ने 'अंतर से अंतरीक्ष की ओर' भव्य भाव यात्रा करवाई। जिसमें सभी ने उत्साह के साथ भाग लिया।

दिनांक 19 नवंबर को प्रातः जिनालय में शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु का सामूहिक मस्तकाभिषेक किया गया। प्रातः 8 बजे पू. गणि मेहुलप्रभसागरजी म., पू. मुनि मयूखप्रभसागरजी म. एवं पू. मुनि मंथनप्रभसागरजी म. का गृहांगण में पदार्पण करवाया। गुरुपूजन एवं मांगलिक श्रवण के पश्चात आराधना भवन में धर्मसभा का आयोजन किया गया।

सकल श्री संघ के साथ धर्मसभा में प्रवेश करते हुए तपस्वी अमर रहो... का उद्घोष किया गया। सभा में मंगलाचरण के पश्चात विराज भाई शाह ने तप अनुमोदना करते हुए तपस्वियों का परिचय एवं दीक्षार्थी बहिनों के त्याग भावों की अनुमोदना की। तिरपातुर संघ एवं ललवानी परिवार की ओर से सभी आराधक, दीक्षार्थी भाई-बहिनों का भावभीना अभिनंदन किया गया। गुरु भगवंतों ने तप-त्याग धर्म की महिमा बताई।

दो दिन का पूरा उत्सव एवं तीनों समय की साधर्मिक भक्ति का संपूर्ण लाभ श्रीमती विमला बाई ललित कुमार निहालचंद ललवाणी परिवार ने उमंग के साथ लिया। तिरुपातुर में ऐसा उपधान तपस्वी की अनुमोदना का यह पहला उत्सव रहा।

सुविहित प्रकाशन परिचय

-मुनि विरक्तप्रभसागर

पुस्तक-**भक्ति रस** पुष्प-284

संयोजन-मुनि विरक्तप्रभसागर

प्रकाशन वर्ष-2023 संस्करण-द्वितीय

मूल्य-10 रु पृष्ठ संख्या-48

विषय-जिनमन्दिर उपयोगी स्तुति, दोहे

विषय विवरण-यह लघु आकार की पुस्तिका जिनमंदिर में परमात्मा, गौतम स्वामी एवं दादा गुरुदेव के सम्मुख में बोले जाने वाली स्तुति, प्रदक्षिणा स्तुति, अभिषेक स्तवन, अष्टप्रकारी एवं नवांगी पूजा के संस्कृत/हिन्दी दोहे, प्रार्थना, आदि संयोजित किये गये हैं। जिससे श्रद्धालुओं को एक पुस्तक में ही सारी उपयोगी सामग्री उपलब्ध हो सकें एवं उनकी आराधना में अभिवृद्धि हो सकें।

कुरींजीपाडी में मंदिर बनेगा

तमिलनाडु के कुरींजीपाडी गांव में परमात्मा मुनिसुव्रतस्वामी का जिन मंदिर बनेगा। श्री संघ मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिये पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के सानिध्य में टिण्डीवनम् पहुँचे। गोलेच्छा परिवार के श्री अमोलकचंदजी रेखचंदजी अशोककुमारजी ने भूमि अर्पण की।

इस मंदिर में परमात्मा मुनिसुव्रतस्वामी, गणधर गौतम स्वामी, दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की भामण्डल सहित प्रतिमाऐं बिराजमान की जायेगी। तथा नाकोडा भैरव व पद्मावती देवी की प्रतिमाऐं भी बिराजमान की जायेगी।

इन प्रतिमाओं की अंजनशलाका सेलम नगर में ता. 21 जनवरी को पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री के करकमलों से संपन्न होगी।

मूलनायक श्री मुनिसुव्रतस्वामी प्रतिमा भराने का लाभ श्री भंवरीबाई आशकरणजी गुलेच्छा एवं बोहरा परिवार कुरिंजीपाडी ने लिया। गणधर गौतमस्वामी का लाभ श्री शंकरलालजी गौतमचंदजी शशिकुमार विजयकुमार पारसचंद हुडिया बैद परिवार ने, दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि का लाभ श्री अमोलकचंदजी रेखचंदजी नरेश अशोक नवरतन रूपचंद ज्ञानचंद गुलेच्छा परिवार ने लिया। नाकोडा भैरव की प्रतिमा का लाभ श्रीमती सिरेकंवरबाई शांतिबाई दीपक महावीर पंकज दक्ष जिगर गुलेच्छा परिवार ने तथा पद्मावती देवी का लाभ श्रीमती वसंताबाई गौतमचंदजी हुडिया बैद परिवार ने लिया।

प्रेषक : मुकेश प्रजापत

कोयम्बतूर में प्रतिष्ठा 21 जनवरी को

कोयम्बतूर निवासी श्री माणकचंदजी पूनमचंदजी झाबक परिवार द्वारा निर्मित श्री आदिनाथ गृह जिनालय की प्रतिष्ठा ता. 21 जनवरी 2024 पौष सुदि 11 रविवार को संपन्न होगी।

झाबक परिवार प्रतिष्ठा की विनंती लेकर चेन्नई बिराजमान पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की सेवा में पहुँचा। उनकी विनंती को स्वीकार कर पूज्यश्री ने ता. 21 जनवरी का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया।

यह प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री के शिष्य पूज्य गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में संपन्न होगी।

झाबक परिवार ने बताया कि उनकी माताजी श्रीमती पिस्ताबाई ने गृह मंदिर का जो सपना देखा था, वह अब साकार होने जा रहा है। इस मंदिर में रत्नमयी श्री आदिनाथ, श्री गौतमस्वामी व दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की प्रतिमाऐं प्रतिष्ठित होगी। इन प्रतिमाओं का अंजन विधान चेन्नई में पूज्य आचार्यश्री द्वारा संपन्न हुआ।

प्रतिष्ठा समारोह ता. 19 जनवरी से कुंभ स्थापना के साथ प्रारंभ होगा। ता. 20 को नंद्यावर्त पूजन, अभिषेक आदि विधान संपन्न होंगे। ता. 21 को शुभ मुहूर्त्त में प्रतिष्ठा संपन्न होगी। ता. 22 को द्वारोद्घाटन होगा।

धोरिमन्ना नगर में जिन मन्दिर की पूज्य खरतरगच्छाचार्य
श्री जिनमनोज्ञसूरिजी म.सा.
की पावनकारी निश्रा में दिनांक 11 फरवरी 2024 को प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

साधु साध्वी समाचार

0 पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 2 सिणधरी नगर में यशस्वी चातुर्मास पूर्ण कर जहाज मंदिर पधारे जहाँ उनकी पावन निश्रा में आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की 98वीं पुण्यतिथि ता. 4 दिसम्बर को मनाई गई। वहाँ से विहार कर पूज्य श्री धोरीमन्ना पधारे जहाँ नवनिर्मित उपाश्रय भवन का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

0 पू. स्थविर मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पू. गणिवर्य श्री मनीषप्रभसागरजी म. ठाणा 3 कोयम्बतूर चातुर्मास संपन्न कर तिरपुर, ईरोड होते हुए सेलम पधार रहे हैं।

0 पू. उपाध्याय प्रवर श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा गांधीधाम से विहार कर शंखेश्वर, रतलाम होते हुए जनवरी के तीसरे सप्ताह तक खाचरोद पधारेंगे। वहाँ से इन्दौर होते हुए रायपुर की ओर विहार करेंगे।

0 पू. उपाध्याय प्रवर श्री मनीषसागरजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में राजनांदगांव नगर में श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, राजनांदगांव के तत्वावधान में ता. 26 दिसम्बर 23 से 29 दिसम्बर 23 तक का छह दिवसीय संस्कार सृजन शिविर का आयोजन किया गया है। समापन 30 दिसम्बर को होगा।

0 पू. उपाध्याय प्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 3 शहादा चातुर्मास व उपधान आदि की सम्पन्नता के पश्चात् तलोदा, अक्कलकुआं, खापर, सेलंभा होते हुए सूरत पधार रहे हैं।

0 पू. गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ठाणा 2 ने तिरपातूर चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् विहार कर सेलम, ईरोड, तिरपुर होते हुए कोयम्बतूर पधार रहे हैं, जहाँ उनकी निश्रा में श्री पूनमचन्दजी झाबक परिवार द्वारा निर्मित उनके गृह मंदिर में श्री आदिनाथ जिन मंदिर की प्रतिष्ठा ता. 21 जनवरी 2024 को सम्पन्न होगी।

0 पू. मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म. पू. समयप्रभसागरजी म. पू. श्रेयांसप्रभसागरजी म. पू. महितप्रभसागरजी म. पालीताणा से विहार कर सूरत पधार रहे हैं। जनवरी के प्रथम सप्ताह तक सूरत पधारने की संभावना है।

0 पू. मुनि श्री ऋषभसागरजी म. आदि ठाणा 4 की पावन निश्रा में धमतरी नगर में श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, धमतरी के तत्वावधान में ता. 25 दिसम्बर 23 से 30 दिसम्बर 23 तक का छह दिवसीय संस्कार सृजन शिविर का आयोजन किया गया है।

0 पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 4 चेन्नई से विहार कर वेल्लूर, कृष्णगिरि होते हुए जनवरी के प्रथम सप्ताह तक बैंगलोर पधारेंगे।

0 पू. मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. ठाणा 2 तिरपातूर से विहार कर बल्लारी पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 28 जनवरी 24 को प्रतिष्ठा संबंधी जाजम के चढावे होंगे।

0 पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.आदि ठाणा पालीताना श्री जिन हरि विहार में बिराज रहे हैं।

0 पू. प्रवर्त्तिनी श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा कोलकाता का चातुर्मास सम्पन्न कर खडगपुर की ओर विहार किया है। जहाँ उनकी पावन निश्रा में साध्वी श्री दिव्यदर्शना श्रीजी म. तत्त्वदर्शना श्रीजी म. सम्यग्दर्शना श्रीजी म. के संयम के 50 वर्ष पूर्ण होने पर प्रभु भक्ति महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया है।

0 पू. गणिनी प्रवरा श्री सुलोचना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा बैंगलोर बिराज रहे हैं। शल्य चिकित्सक के पश्चात् स्वास्थ्य लाभ हेतु विराजमान है।

0 पू. गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म. पू. पूर्णप्रभा श्रीजी म. आदि ठाणा ने चैन्नई चातुर्मास पश्चात् बैंगलोर-बल्लारी की ओर विहार किया है जहाँ उनकी प्रेरणा से निर्मित जिनमंदिर दादावाड़ी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा व भागवती दीक्षा सम्पन्न होगी।

0 पू. साध्वी श्री मणिप्रभा श्रीजी म. आदि ठाणा कोटा से विहार कर जयपुर पधारे हैं जहाँ उनकी निश्रा में मोहन बाड़ी आदिनाथ जिनमंदिर की प्रथम वर्षगांठ मनाई जायेगी।

0 पू. साध्वी श्री सुभद्रा श्रीजी म. शुभंकरा श्रीजी आदि ठाणा रायपुर से विहार कर दुर्ग पधारे है।

0 पू. माताजी म. श्री रतनमाला श्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभा श्रीजी म. आदि ठाणा

सांचोर नगर में चातुर्मास संपन्न कर कारोला, हाडेचा, चितलवाना, सेवाड़ा, धोरीमन्ना होते हुए बाडमेर कुशल वाटिका पधार गये हैं।

0 पू. साध्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म. आदि ठाणा गुन्टुर चातुर्मास सम्पन्न कर स्वास्थ्य की दृष्टि से वहीं बिराज रहे हैं। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् इचलकरंजी की ओर विहार करेंगे।

0 पू. साध्वी श्री कल्पलता श्रीजी म. आदि ठाणा फालना चातुर्मास सम्पन्न कर विहार कर पाली अनुभव स्मारक पधार गये हैं। वहाँ से शंखेश्वर की और विहार किया है।

0 पू. साध्वी डॉ. शासनप्रभा श्रीजी म. ठाणा 2 ने भिवंडी चातुर्मास की सम्पन्नता के पश्चात् उन्होंने बाडमेर की ओर विहार किया है।

0 पू. साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा 5 धमतरी से विहार कर 25 दिसम्बर तक कोमाखान पधारेंगे, आगे शिखरजी की ओर विहार की संभावना है।

0 पू. साध्वी डॉ. श्री प्रियस्मिता श्रीजी म. आदि ठाणा रायपुर बिराज रहे हैं।

0 पू. साध्वी श्री प्रियकल्पना श्रीजी म. आदि ठाणा बैंगलोर से विहार कर तिरपातुर पधारे हैं। वहाँ से सेलम पधारेंगे।

0 पू. साध्वी श्री हेमरत्ना श्रीजी म. आदि ठाणा 5 ने पाटण से शंखेश्वर होते अहमदाबाद पधारे है।

0 पू. साध्वी श्री सौम्यगुणा श्रीजी म. आदि ठाणा जोधपुर चातुर्मास की सम्पन्नता के पश्चात् आस पास उपनगरों में विचरण कर रहे हैं। वहाँ ज्ञान वाटिका के भवन का उद्घाटन पश्चात् विहार करेंगे।

0 पू. साध्वी श्री प्रियरंजना श्रीजी म. आदि ठाणा ने बालोतरा चातुर्मास की सम्पन्न्ता के पश्चात् पाली की ओर विहार किया है। वहाँ से 22 दिसम्बर को ब्यावर की ओर विहार किया है।

0 पू. साध्वी श्री कनकप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में सहसपुर लोहारा नगर में श्री कुंथुनाथ परमात्मा जिन मंदिर की वार्षिक ध्वजा आरोहण समारोह का आयोजन ता. 26 दिसम्बर 23 को संपन्न हुआ।

0 पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 3 का छत्तीसगढ में विचरण चल रहा है।

0 पू. साध्वी श्री शुद्धांजना श्रीजी म. आदि ठाणा सिकन्द्राबाद चातुर्मास की सम्पन्नता के पश्चात् राजस्थान की ओर विहार किया है।

0 पू. साध्वी डॉ. नीलांजना श्रीजी म. ठाणा 4 पाली चातुर्मास सम्पन्नता के पश्चात् करमावास, सिवाना, सिणधरी होते हुए बाड़मेर पधार गये हैं।

0 पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजना श्रीजी म. आदि ठाणा 3 तथा पू. प्रियस्वर्णांजना श्रीजी म. ठाणा 5 चैन्नई से विहार कर टिंडीवनम् होते हुए सेलम पधारेंगे जहाँ प्रतिष्ठा व दीक्षाऐं सम्पन्न होगी।

0 पू. साध्वी श्री प्रशमिता श्रीजी म. अर्हम् निधि श्रीजी म. आदि ठाणा मुंबई चातुर्मास की सम्पन्नता के पश्चात् भायन्दर पधारें। समीपस्थ क्षेत्रों में विचरण कर पुनः मुम्बई सांचोर खरतरगच्छ संघ विल्सन स्ट्रीट में

पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में जिनमंदिर की वार्षिक ध्वजा का समारोह सम्पन्न होगा।

0 पू. साध्वी श्री मयूरप्रिया श्रीजी म. आदि ठाणा 5 पालीताना से सूरत की ओर विहार किया हैं।

0 पू. साध्वी श्री डॉ. विज्ञांजना श्रीजी म. सिणधरी से विहार कर बाड़मेर कुशल वाटिका पधार गये।

0 पू. साध्वी श्री दर्शनप्रभा श्रीजी म. ठाणा 3 राजनांदगांव चातुर्मास सम्पन्न हुआ वहाँ से विहार कर रायपुर पधारें जहाँ पू. ज्ञानप्रभा श्रीजी म. के नेत्रों की शल्य चिकित्सा संपन्न हुई।

(शेष पृष्ठ 7 का)

प्रिय आत्मन्

जलेगा! प्रभु कैसे पधारेंगे! साक्षात्कार कैसे होगा! ज्योति कैसे जलेगी!

यह बात हम सभी पर लागू होती है। चातुर्मास का हितकारी परिणाम हमें तभी मिल सकता है, जब हमारे अन्तर में रुचि, समर्पण व जिज्ञासा हो!

बस! तुम्हें यह भाव अपने अन्तर में प्रकट करना है। अपने हृदय के दीपक में कषाय के पानी को निकाल कर जिज्ञासा और रुचि का तेल डाल देना है। पूरे परिवार को धर्मलाभ कहना। विशेष फिर!

तुम्हारा
जिनमणिप्रभसूरि

(शेष पृष्ठ 11 का)

अधूरा सपना

सागर बात कर ही रहा था कि इतने में घोड़ों की टाप सुनायी दी।

सागर और वंकचूल आवाज की दिशा में देखने लगे। आवाज जैसे ही निकट आयी उन्होंने देखा-ये तो अपने ही साथी हीरा और शंकर है। शंकर ने लगाम ढीली की और घोड़ा रुक गया। हीरा और शंकर ने अंदर प्रवेश किया, प्रणाम करके कहा-सरदार! आपकी आज्ञानुसार हम सार्थ की सुरक्षा व्यवस्था अच्छी तरह से देखकर आ गये हैं। सार्थ में कुल 50 रक्षक है।

वंकचूल ने उनकी पीठ थपथपायी और कहा-तुम्हारे परिश्रम का मूल्य तो नहीं चुका सकता पर हम अवश्य ही योजना पूरी होने के बाद तुम्हारा सम्मान करेंगे।

आगंतुक दोनों ने कहा-आपने हमें अपने कार्य के लायक समझा यही हमारा सबसे बड़ा सम्मान है।

वंकचूल ने प्रस्थान की तैयारी हेतु सागर को सारी व्यवस्था समझा दी।

ठीक समय पर 20 लोगों के साथ आवश्यक शस्त्र लेकर वंकचूल प्रस्थान करने लगा। सुंदरी अपनी भाभी के साथ विजयतिलक का थाल लेकर उपस्थित हुई। वंकचूल को लगा-वह पल्ली के विकास में डूबकर अपनी बहिन एवं पत्नी के साथ समय नीहवंत् बीता रहा है। जिस बहिन एपं पत्नी ने अपने राजपरिवार के मान-सम्मान और सुविधाओं को त्यागकर उसके साथ इस अनजान प्रदेश और भील की बस्ती को आत्मसात् कर लिया है। पत्नी एवं बहिन के त्याग एवं बलिदान को शायद अभी तक वह समझ नहीं पाया है। जीवन की यह कैसी विचित्रता है कि व्यक्ति दूर के लोगों को समझ सकता है। उन्हें यथेष्ट मान-सम्मान और प्यार भी देता है पर निकट के परिजनों का जिनका सबसे ज्यादा सहयोग होता है उन्हें नजरअंदाज कर देता हैं

वंकचूल ने सुंदरीके गाल थपथपाते हुए कहा-तुम दोनों हो सके तो मुझे क्षमा कर देना। हालांकि मैं जानता हूं कि भूले माफी योग्य नहीं है। मैं तुम्हें तुम्हारे अधिकार नहीं दे पाया हूं। तुमने मुझे जीवन की सारी खुशियां दी पर मैं तुम्हें अपने हृदय का प्रेम देकर तृप्त नहीं कर पाया कहते-कहते वंकचूल का गला भारी हो गया।

कमला एवं सुंदरी की आंखें भी वंकचूल की इन नेहभरी बातों से भर आयी पर उन्होंने वक्त की नजाकत को समझा। इस समय वंकचूल मोर्चे पर जा रहा है ऐसे समय में उनकी नकारात्मक सोच वंकचूल के मन और प्राणों को और भारी कर देगी। क्रमशः

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर दौडता-दौडता घटाशंकर के पास गया। कुर्सी पर बैठा और तुरंत बोलना शुरु किया- डॉक्टर साहब! मुझे बचा लीजिये! मेरा दिमाग उल्टा पुल्टा हो गया है। कुछ समझ नहीं आता... मैं क्या कर रहा हूँ!

शेविंग क्रीम के बदले टूथपेस्ट से शेविंग करता हूँ!

टूथपेस्ट के बदले चाकु से अपने दांत घिसता हूँ!

टीशर्ट को पाँव में और पेंट को ऊपर पहनने की चेष्टा करता हूँ!

अपने घर के बजाय पडौसी के घर में जाकर सो जाता हूँ!

कुछ समझ नहीं आता डॉक्टर साहब! मेरा इलाज कीजिये। पैसा कितना भी लग जाये, चिन्ता नहीं। आप तो जोरदार इलाज करें। और मुझे बतायें कि मैं ठीक तो हो जाऊँगा न! कब मिटेगा यह रोग!

घटाशंकर बोला- कभी नहीं मिटेगा तुम्हारा रोग!

जटाशंकर ने पूछा- ऐसा क्यों डॉक्टर साहब!

घटाशंकर ने कहा- क्योंकि तुम अस्पताल नहीं अपितु सैलून की दुकान पर नाई के सामने आ गये हो। और मैं तुम्हारे बाल तो काट सकता हूँ पर इलाज नहीं कर सकता।

यह उदाहरण मिथ्यात्व का है। मिथ्यात्व व्यक्ति को सत्य से विपरीत ले जाता है। वह जो होता है, उसे अस्वीकार करता है और जो नहीं है, उसे स्वीकार करता है। वह पाना चाहता है सुख पर मिलता है दुख! उसकी समस्या तभी मिटती है जब वह यथार्थ को स्वीकार कर लेता है।

''खरतरगच्छ उद्‌भव काल'' का विमोचन

पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा लिखित 'खरतरगच्छ उद्‌भव काल' नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ का विमोचन पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में चेन्नई नगर में किया गया।

विमोचन का लाभ तिरपातूर निवासी श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी पुखराजजी कवाड परिवार द्वारा लिया गया। इस ग्रन्थ में प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर यह प्रमाणित किया गया है कि खरतरगच्छ नामकरण पाटण नरेश दुर्लभराजा के शासन में उनके द्वारा पंचासरा पार्श्वनाथ परमात्मा के दरबार में वि. सं. 1075 के आसपास संपन्न हुआ था। जबकि वि. 1080 में पाटण पर दुर्लभराजा का नहीं, अपितु भीमदेव का शासन था। और पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनेश्वरसूरि जालोर में बिराज रहे थे।

पूज्य आचार्य श्री ने कहा- इस ग्रन्थ का स्वाध्याय हर गच्छानुयायी को अवश्य करना चाहिये।

।। श्री महावीर स्वामिने नमः ।।

।। तीर्थाधिपति श्री शांतिनाथाय नमः ।।

अनंत लब्धिनिधानाय श्री गौतम स्वामिने नमः

खरतरबिरुदधारक आचार्य जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिभ्यो नमः ।।

पू. गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः

।। श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः ।।

श्री जहाज मंदिर

(राजस्थान) में

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

की समाधि भूमि **जहाज मंदिर**

मांडवला में मूलनायक शांतिनाथ मंदिर प्रतिष्ठा की

25 वीं वर्षगांठ रजत जयंती निमित्ते

भव्य मेले का आयोजन

❋ त्रिदिवसीय कार्यक्रम ❋

21 फरवरी से 23 फरवरी 2024

❋ आज्ञा प्रदाता ❋

प. पू. गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

आत्मीय आमंत्रण

पावन ध्वजारोहण

संवत् 2080, माघ शुक्ला 14

शुक्रवार

दि. 23 फरवरी 2024

❋ शुभ निश्रा ❋

प. पू. खरतरगच्छाचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा.

आदि ठाणा

❋ पावन सान्निध्य ❋

प.पू. बहिन म. साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

प.पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा.

निवेदक

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मन्दिर

माण्डवला - 343042, जिला जालोर (राज.)

फोन : 096496 40451 mail :- jahaj_mandir@yahoo.co.in, Web. : www.jahajmandir.com

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2021-2023 Date of Posting 7th

93145 10196, 96026 23456

श्री पार्श्वनाथाय नमः

रिश्तों का मंडप आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

जैन परिवारों के वैवाहिक रिश्तों की खुशियों का मंडप

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरतंर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते है। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हों अर्थात् प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते है। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध है। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आईपीएस हो या राजनीतिक, समाजसेवा के क्षेत्र से हो देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र, हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है । संकोच नहीं , सम्पर्क करें

पदमचंद जैन 9314510196

प्रोफेशनल, सी.ए., पायलट, इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैनिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-यवतियों के लिए जांचे परखें वैवाहिक रिश्तों का खजाना

1 जून 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

जैन-वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव

इंटरनेशनल जैन एण्ड वैश्य ऑर्गनाइजेशन

1662-बी, एपी अपार्टमेट, खरबूजा मंडी, वैभव लॉन के सामने, एमडी रोड़, जयपुर-04

93145 10196, 96026 23456

सेवा के सरोकार **शिक्षा, छात्रवृत्ति, चिकित्सा, रोजगार, विधवा पेंशन**

सभी साधर्मिक जैन परिवारों के आवेदकों की सभी जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 096496 40451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक श्रीमती पुष्पा ए, जैन द्वारा श्री एस. कम्प्यूटर सेन्टर, हनुमानजी मंदिर के सामने वाली गली, जालोरी गेट जोधपुर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, माण्डवला, जि जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीमती पुष्पा ए, जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408